वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक
अक्टूबर 01-15, 2025

हिन्दू विश्व

1925 से 2025

संघ के दिव्यतम् सौ वर्ष

ग्वालियर (म.प्र.) के विवेकानंद सभागार में नगर के अधिवक्ता, चिकित्सक, अध्यापक, व्यवसायी तथा अन्य नागरिकों के साथ 'वर्तमान परिवेश में विमर्श का महत्व' नामक एक विशेष 'संवाद' कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद परांडे

पानीपत (हरियाणा) में सामाजिक समरसता संगोष्ठी में उपस्थित विहिप सह संगठन महामंत्री श्री विनायकराव देशपाण्डे तथा प्रांत के पदाधिकारी

हिन्दू हेरीटेज सेंटर रोटोरुआ न्यूज़ीलैण्ड में गणेशोत्सव कार्यक्रम में उपस्थित पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं बच्चे

नागपुर (महा.) में विहिप-प्रांतीय मार्गदर्शक मंडल की बैठक को संबोधित करते विहिप महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा जी तथा बैठक में उपस्थित पूज्य संतगण

इस पक्ष में ....

हिन्दू विश्व
राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हे इन्द्रदेव ! जो दुष्ट, भूमि के मालिक की हिंसा करते हैं, उन्हें आप मारते हैं। जो बहुत से पुत्रों वाली, प्रचुर अन्नादि उत्पन्न करने में समर्थ पृथ्वी का दोहन करते हैं और सहस्रों धाराओं से वर्षणशील द्युलोक का दोहन कर सोम का अभिषव करते हैं, वे मनुष्य आपकी श्रेष्ठता की ही सतत स्तुति करते हैं। – यजुर्वेद

01–15 अक्टूबर, 2025
आश्विन शुक्ल – कार्तिक कृष्ण पक्ष
पिंगल संवत्सर
वि. सं. – 2082, युगाब्द– 5127

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. – 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
विजय कुमार,
रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. – 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग – 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली–110022–05
दूरभाष : 09582555152

011–26178992, 011–26103495
hinduvishwa@gmail.com

– : मूल्य :–

विदेशों के लिए वार्षिक डाक व्यय सहित	$ 75 USD
एक प्रति	15/–
वार्षिक	300/–
त्रिवर्षीय	750/–
पंचवर्षीय	1,200/–
दसवर्षीय	2,250/–
पन्द्रह वर्षीय	3,100/–

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना
- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज – 28

05 संघ के चिर युवा बने रहने का रहस्य है गठ पद्धति

केवल सत्ता से मत करना परिवर्तन की आस!	07
संघ का सौ वर्षों का इतिहास "संघर्ष और सेवा–चरैवेति चरैवेति"	09
सामाजिक समरसता का महत्व	11
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और पंच परिवर्तन	14
विश्वगुरु बनने की नई इबारत लिखता भागवत का उद्बोधन	16
देशव्यापी नशामुक्त भारत अभियान	18
आयुर्वेद के आहार–विषयक महावाक्य	20
धर्मान्तरण का घिनौना सच : माँस खिलाकर पिलाते थे खून...	21
पानीपत की धरती से सामाजिक समरसता का संदेश	22
सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में पहला ऐतिहासिक संस्कृत रामायण का प्रीमियर	23
विहिप–प्रांतीय मार्गदर्शक मंडल बैठक सम्पन्न	24
हिंदू हेरिटेज सेंटर में गणेशोत्सव	25
हर काम और हर श्रमिक का सम्मान करें, तभी समृद्ध होगा समाज : मिलिंद परांडे	26

सुभाषित

कल्पयति येन वृत्तिं येन च लोके प्रशस्यते सद्भिः।
स गुणस्तेन च गुणिना रक्ष्यः संवर्द्धनीयश्च।।

जिस गुण से मनुष्य की जीविका चलती हो और प्रशंसा होती हो, गुणी को चाहिए कि उस गुण की रक्षा करे और उसका वर्द्धन करे।

संघ का मूलमंत्र है 'सर्वे भवंतु सुखिनः'

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

संघ की स्थापना के समय से ही उसका लक्ष्य केवल संगठन निर्माण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह एक व्यापक सांस्कृतिक और मानवीय दृष्टि से संचालित हुआ है। यही कारण है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मूलमंत्र है – *"सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यंतु, मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्"* इस महान मंत्र का आशय है – सब सुखी हों, सब निरोगी रहें, सबका जीवन मंगलमय हो और किसी को भी दुःख न सहना पड़े।

यह श्लोक केवल एक धार्मिक उद्घोष नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा है। इसमें संपूर्ण मानवता के लिए शुभकामना है। संघ ने इस मंत्र को अपने जीवन–दर्शन के रूप में स्वीकार कर यह स्पष्ट कर दिया कि उसका लक्ष्य किसी एक वर्ग, जाति, भाषा या क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समग्र मानवता के कल्याण की कामना करता है।

पश्चिमी सभ्यता में सुख और सफलता का अर्थ भौतिक साधनों की प्राप्ति से जुड़ता है, परंतु भारतीय दृष्टि में सुख का अर्थ है – शरीर, मन और आत्मा की संतुलित एवं समग्र प्रगति। *"सर्वे भवंतु सुखिनः"* का भाव यही है कि हर व्यक्ति को समान अवसर मिले, उसे भय और अभाव से मुक्ति मिले और वह अपने वास्तविक आत्मस्वरूप को पहचान कर परम कल्याण की ओर बढ़े।

यही कारण है कि भारत में धर्म का अर्थ कभी संकीर्ण संप्रदाय नहीं रहा, बल्कि वह समस्त प्राणियों के हित का मार्ग रहा है। संघ इसी सनातन परंपरा को आगे बढ़ाते हुए समाज में समरसता, सेवा और संगठन का संदेश देता है।

संघ का यह मूलमंत्र केवल पुस्तकीय आदर्श नहीं है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण सेवा–कार्य, शिक्षा, ग्राम विकास, आपदा–राहत और सामाजिक जागरण के अनगिनत उदाहरणों में मिलता है। जब–जब देश पर आपदा आई – भूकंप, बाढ़, महामारी अथवा किसी अन्य संकट के समय – संघ के स्वयंसेवक निस्वार्थ भाव से पीड़ितों के बीच पहुँचे। यह निःस्वार्थ सेवा *'सर्वे भवंतु सुखिनः'* के भाव का ही मूर्त रूप है।

ग्रामीण भारत में शिक्षा, स्वास्थ्य और संस्कार के क्षेत्र में संघ की प्रेरणा से कार्य कर रहे संगठन जिस समर्पण से सेवा कर रहे हैं, वह भी इसी मंत्र का साकार स्वरूप है। आज समाज कई प्रकार के विभाजनों से जूझ रहा है – जाति, पंथ, भाषा और क्षेत्रीयता के नाम पर दीवारें खड़ी हो रही हैं। ऐसे समय में "सर्वे भवंतु सुखिनः" एक समरसतापूर्ण दृष्टि प्रदान करता है। संघ का मानना है कि जब तक समाज एकात्म नहीं होगा, तब तक वास्तविक सुख और शांति संभव नहीं है। यह मूलमंत्र हमें यह सिखाता है कि दूसरों के दुःख में भागीदार होना और दूसरों के सुख को अपना सुख मानना ही भारतीय संस्कृति की असली पहचान है।

आज विश्व युद्ध, आतंकवाद, प्रदूषण और आर्थिक विषमता की त्रासदी से जूझ रहा है। ऐसे समय में भारत की यह सार्वभौमिक प्रार्थना "सर्वे भवंतु सुखिनः" संपूर्ण मानवता के लिए मार्गदर्शक बन सकती है। यदि राष्ट्र केवल अपने स्वार्थ में सीमित रहेंगे, तो संघर्ष और अशांति बढ़ेगी। किंतु यदि सभी देश और समाज परस्पर कल्याण की भावना से आगे बढ़ें, तो शांति और प्रगति संभव है।

संघ के इस दृष्टिकोण में भारत की वसुधैव कुटुंबकम् की भावना प्रकट होती है। जब परिवार की भाँति संपूर्ण जगत को अपना मान लिया जाए, तभी यह मंत्र वास्तविक अर्थ में साकार हो सकेगा। आज जब भौतिकता, उपभोक्तावाद और स्वार्थपरता बढ़ रही है, तब संघ का यह मंत्र और भी प्रासंगिक हो जाता है। समाज को यह स्मरण दिलाना आवश्यक है कि सुख केवल स्वयं तक सीमित न होकर समष्टि के साथ जुड़ा है। यदि समाज का एक वर्ग दुःखी है, तो संपूर्ण राष्ट्र सुखी नहीं हो सकता। अतः हमें व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन में "सर्वे भवंतु सुखिनः" को आचरण में लाना होगा।

आज विश्व युद्ध, आतंकवाद, प्रदूषण और आर्थिक विषमता की त्रासदी से जूझ रहा है। ऐसे समय में भारत की यह सार्वभौमिक प्रार्थना ''सर्वे भवंतु सुखिनः'' संपूर्ण मानवता के लिए मार्गदर्शक बन सकती है। यदि राष्ट्र केवल अपने स्वार्थ में सीमित रहेंगे, तो संघर्ष और अशांति बढ़ेगी। किंतु यदि सभी देश और समाज परस्पर कल्याण की भावना से आगे बढ़ें, तो शांति और प्रगति संभव है।

संघ के चिर युवा बने रहने का रहस्य है गठ पद्धति

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

गठनायक संघ का सबसे महत्वपूर्ण दायित्व

संघ के सभी दायित्व महत्वपूर्ण हैं, किन्तु संघ की शाखा जिस पद्धति और दायित्व से मौलिक संवर्द्धन प्राप्त करता है, वह गठ पद्धति है और गठ के प्रमुख को गठनायक कहते हैं। संघ की जिस शाखा में यह गठ पद्धति सुदृढ़ है, सुचारू रूप से संचालित होती है, गठनायक कुशल हैं और यथार्थ में अपनी गली को नेतृत्व दे पाने में समर्थ हैं, वो शाखाएँ प्राणवान और उर्जावन होती हैं। वहाँ सतत नवीन भर्तियाँ होती रहती हैं, शाखा में सँख्या पर्याप्त रहती है। भरपुर सँख्या वाली व्यवस्थित और अनुशासित शाखा का समाज पर बहुत व्यापक प्रभाव पड़ता है। गठनायक संघ का वह मूल आधारभूत दायित्व रचना है, जिसके बलपर संघ समाज में चल रही शाखा को समाज का संगठन बनाता है।

संघ ने भारत राष्ट्र को परम वैभवशाली बनाने के संकल्प के साथ हिन्दू समाज का संगठन करना आरम्भ किया। संघ ने सैनिकीय प्रणाली की संगठन रचना बनाई। संगठन को दीर्घकालिक स्थायित्व प्राप्त हो, इस हेतु से कई प्रकार के प्रयोग किए गए, अनेकविध संगठन प्रक्रियाओं को स्वीकार किया गया, उनमें से एक है गठ पद्धति। गठ पद्धति वस्तुतः समाज में वैचारिक आधार पर सम्पर्क करने और संगठन से लोगों को जोड़ने की एक अनुपम पद्धति है। इसके सहारे संगठन चिर पुरातन विचारों पर आश्रित होकर भी नित्य नूतन बना रहता है, नवीनतम उर्जा और उत्साह से संयुक्त होकर वैदिक जीवनशैली जीने वाले हिन्दू को गौरवान्वित होकर राष्ट्र हेतू नियमित और नैमित्तिक योगदान के लिए प्रेरित करता रहता है।

सम्पर्क से होता है विचारों का प्रवाह

संत जब अध्ययन और साधना का बल पाकर समाज प्रबोधन का कार्य करना आरम्भ करते हैं, तो अपने जानने वालों से स्वयं को अनुभूत तत्वों के बारे में बताना प्रारम्भ करते हैं। भजन, कीर्तन, उत्सव, अनुष्ठान, विभिन्न आयोजनों, कथा और सत्संग के माध्यम से जन सम्पर्क आरम्भ करते हैं। इससे धीरे–धीरे टोलियाँ बनने लगती हैं, लोग जत्थों में एकत्र होकर आने लगते हैं और धीरे–धीरे एक आश्रम, मठ, मत, सम्प्रदाय इत्यादि का निर्माण हो जाता है। यह सामूहिक जनशक्ति उस समुदाय के विचारों को सामान्य जनमानस तक ले जाकर, उनका मार्गदर्शन करने का प्रयत्न करता है। ऐसे ही जन सम्पर्क की एक पद्धति संघ ने भी अपनाया है, जिसे हम गठ पद्धति के नाम से जानते हैं।

क्या है गठ पद्धति

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं में कई प्रकार के शारीरिक उपक्रम यथा– व्यायाम, योगासन, पदविन्यास, नियुद्ध, दंड, दंडयुद्ध, असँख्य प्रकार के खेल, बौद्धिक खेल इत्यादि होते हैं। बाद में 20 मिनट वैचारिक चर्चा, उद्बोधन, भाषण, समाचार चर्चा और विमर्श के कार्य होते हैं। अंत में भारत माता और देवताओं को अपने राष्ट्रकार्य के भाव–संकल्प से युक्त प्रार्थना सुनाते हैं। किन्तु ये सभी कार्यक्रम सुचारु रूप से संचालित होने के लिए शाखा के लिए संघ स्थान पर स्वयंसेवक पर्याप्त सँख्या में आएँ, यह आवश्यक है। पुराने स्वयंसेवक नियमित रूप से आएँ और नये लोग स्वयंसेवक बनें इसके लिए समाज में सम्पर्क की जो पद्धति संघ ने विकसीत की है, उस पद्धति को गठ पद्धति कहा जाता है।

गठ पद्धति कैसे संचालित होती है?

गठ पद्धति समाज में निवास करने वाले स्वयंसेवकों और समाज के सम्पर्कित, परिचित, मित्र और घनिष्ठों को संघ स्थान तक बुलाकर लाने की एक अनुपम पद्धति है। अपेक्षा रहती है कि एक गठ का नेतृत्वकर्ता, जिसे गठनायक कहते हैं, वह शाखा के समय से आधा घंटा पूर्व अपने घर से निकले, अपनी गली में और शाखा जाने के मार्ग में निवास करने वाले छः–सात स्वयंसेवकों के घर जाकर, उनको आवाज लगाकर, तैयार करवा के साथ में शाखा लेकर आए। यदि आदर्श समय विभाजन का ध्यान रखें, तो एक स्वयंसेवक के घर औसत पाँच मिनट लगने से 30 मिनट में छः–सात लोगों को ही लेकर संघ स्थान तक पहुँचना सम्भव है। इसीलिए छः– सात की सँख्या एक गठ में आदर्श मानी जाती है।

गठनायक से अपेक्षाएँ

उपरोक्त वर्णन गठ पद्धति की आरम्भिक अवस्था है, जब गठनायक छः–सात लोगों को संघ की शाखा से जोड़ने और उनको शाखा तक लाने का प्रयास करता है। लेकिन अपेक्षाएँ इतनी ही नहीं हैं। अपेक्षा तो यह है कि हमारा गठनायक निरन्तर सम्पर्क के माध्यम से अपने गठ की इस सँख्या को बढ़ाए। अपनी निवास वाली गली के घर–घर में उसका सम्पर्क हो, हर घर से किसी न किसी शाखा से जोड़ सके, सभी परिवारों में उसका पर्याप्त अपनत्व विकसीत हो, उन सबके सुख– दुख में सहभागी हो, घुलमिल जाए। इस प्रकार वह अपनी गली का सामाजिक–साँस्कृतिक नेतृत्व करने में सक्षम हो जाए।

संगठन सेना और पुलिस का भी

सेना और पुलिस विभाग में भी आरम्भिक स्तर से ऊपर तक एक सुदृढ़ संगठन रचना होती है। सबसे नीचे जो चार–एक की पार्टी होती है, जिसका नेतृत्व हवलदार करता है, वही सबसे आधारभूत ईकाई होती है। सभी प्रकार की बातों का क्रियान्वयन इसी स्तर पर होता है। यह रचना लगभग सभी सैन्य संस्थानों में होता है।

समाज में भी संगठन रचना

किसी भी गाँव में यदि आप जायेंगे तो एक परिवार के रूप में समाज संगठित दिखाई देगा, जिसका एक प्रधान भी परम्परागत रूप से चुना जाता था, प्रधान का नेतृत्व सब मानते थे। गाँव के सभी परिवारों के मुखिया प्रधान की कार्यकारिणी से जुड़े रहते थे, लेकिन गाँव की सबसे छोटी ईकाई परिवार ही होती है, जिसमें परिवार की आर्थिक उपार्जन पद्धति का प्रमुख आमतौर पर सबसे वरिष्ठ सदस्य होते हैं, जिनका अनुशासन पुरा परिवार मानता है। संयुक्त परिवारों में कई पीढ़ियों के लोग साथ रहा करते थे और परिवार के मुखिया का सब आदरपूर्वक अनुशासन मानते थे, परस्पर प्रेम और आदरपूर्ण व्यवहार, परस्पर की देखभाल परिवार का मूलाधार होता था। यह परिवार समाज के संगठन की पहली ईकाई है, इसी को ध्यान में रखकर संघ ने भी अपनी कार्यपद्धति का आधार परिवार भाव को माना है।

जीव–जंतु और पेड़–पौधे भी रहते हैं संगठित

प्रकृति के लगभग अवयव संगठित स्वरूप में होते हैं, यही सबके अस्तित्व का मूल आधार है। आप पक्षियों को उड़ते समय उनकी पंक्ति में उड़ान से समझ जायेंगे उनके संगठन में रहने का आदत। चिटियाँ सदा पंक्तिबद्ध होकर चलती हैं। गायें भी सदा अपने कुनबे के साथ संगठित होकर चरती हैं, बथान में बैठती हैं। बकरीयों को झुंड में चलते तो आपने देखा ही होगा। भेंड़ जब अपने नेतृत्व पर विश्वास कर सर झुकाकर चलती हैं, तो लोग होते हैं, एक भेंड़ कुएँ में तो सब भेंड़ कुएँ में, इसको भेंड़ चाल कहकर भी नकारात्मक रूप में सम्बोधित किया जाता है। लेकिन यह उनके संगठित रहने का बड़ा उदाहरण है।

अन्य अनेक प्रकार के कीट–पतंग, तितलियाँ भी संगठित रहने की आदि हैं। पेड़–पौधे भी झुंड बनाकर उगते, पनपते और पलते हैं, इसीलिए आप आम, अमरूद, सेव, अंगूर, पपीता, नारीयल के बाग, फूलों की बागवानी, धान–गेहूँ के खेत, सब्जियों का क्यारी इत्यादि देख सकते हैं। मनुष्य ने इन सबको देखकर ही संगठित रहना सीखा होगा, इन्हीं के जैसे परिवार और समाज रचना आरम्भ किया होगा, संघ ने उसी को अपनी गठ पद्धति से आगे बढ़ाया और आगे बढ़ते हुए सौ साल की यात्रा पूर्ण कर चुका है। संघ के कदम नित्य निरंतर बढ़ते जा रहे हैं, नित्य नये इतिहास रचते जा रहे हैं।

संतों के आश्रमों–मठों में ऐसी ही रचना होती है

संतों के बड़े आश्रमों, मठों, अखाड़ों में भी ऐसी ही रचना होती है, यद्यपि वहाँ दायित्वों के नामकरण भिन्न होते हैं। लेकिन जो भक्त आश्रमों, मठों में आते हैं, उन्हें सीधे आश्रम के श्रीमहंत से ही नहीं मिलवाया जाता है, आरम्भ में आरम्भिक स्तर के संत ही उनका मार्गदर्शन करते हैं। बाद में आश्रम–मठ में आते–जाते धीरे–धीरे बड़े गुरुओं का सानिध्य और मार्गदर्शन उनको प्राप्त होता है। यहाँ चुँकि धार्मिक–आध्यात्मिक परिवेश होता है, तो गुरु के सामने शिष्य सदा कनिष्ठ अवस्था में ही होता है, लेकिन संघ चुंकि सामाजिक–साँस्कृतिक संगठन है, तो यहाँ भातृ भाव होता है, सभी स्वयंसेवक शुद्ध सात्विक प्रेम के आश्रय से एक–दूसरे से जुड़े होते हैं। इसीलिए भारत की संतानें हम सब हिन्दू हैं भाई–भाई।

हिन्दू संगठन की आवश्यकता क्यों?

हिन्दू समाज अपने वैभवपूर्ण इतिहास के कारण सदियों से अनेक प्रकार के आक्रमणों और षड्यंत्रों का शिकार होता रहा है। लुटेरे यहाँ की समृद्धि देखकर बीच–बीच में आते रहे और अनगिनत घाव देते रहे। हमने लगातार संगठित प्रतिकार भी किया, युद्धों में विजयी भी रहे, किन्तु कालान्तर में हम राजनीतिक रूप में विदेशी शासन की अधीनता में आए, हमारे मानविन्दूओं पर हमले हुए, तीर्थों, मेलों, उत्सवों को बाधित करने की कोशिश हुई, मन्दिरों और मूर्तियों को खंडित किया गया, ग्रन्थ जलाए गए, हमारी प्राचीन शिक्षा और संस्कार व्यवस्था को नष्ट किया गया। अनगिनत अंतहीन अत्याचार का शिकार हुआ हिन्दू समाज, लूट, बलात्कार, हत्या, हिंसा तो आए दिन होते रहते थे। ड्रेन ऑफ वेल्थ की बात कहकर दादा भाई नौरोजी ने जिस गुप्त आर्थिक लूट का संकेत किया था, वह तो परकीय सत्ता के सहारे लम्बे समय से होता आ रहा था, प्रत्यक्ष और परोक्ष लूट देश को लम्बे समय तक खोखला करता रहा। स्वाधीनता के उपरान्त भी गौहत्या, लव जिहाद, धर्मांतरण जैसे षड्यंत्रों के कारण हिन्दू समाज आहत होता रहा। ये सब आजादी के पूर्व भी यथावत प्रचलित थे। ऐसे में हिन्दू समाज को संगठित, जागृत और सचेत कर के राष्ट्र के शत्रुओं से उनकी रक्षा करना अति आवश्यक कार्य है। सुरक्षित समाज ही समवर्द्धित और विकसीत हो सकता है, गौरवशाली अवस्था को प्राप्त हो सकता है।

क्या है परम वैभव?

संगठन के बलपर समाज का स्वाभिमान बढ़ता है, स्वाभिमानी समाज सबल होकर आत्मविश्वास से स्वयं को भरकर समाज और राष्ट्र के कल्याण के हेतु से व्यापक उत्पादन और समाज जागरण का कार्य कर पाता है। समाज जनों के उत्साहजनक योगदान से देश तेजी गति से प्रगति करता है, सभी दिशाओं में आगे बढ़ता है और वैभव को प्राप्त करता है। जब विकास और सम्बर्द्धन सर्वांगीण हो और चरम उत्कर्ष को प्राप्त कर जाए, तो ऐसी अवस्था को परम वैभव कहते हैं।

murari.shukla@gmail.com

केवल सत्ता से मत करना परिवर्तन की आस !

प्रो. संजय द्विवेदी

एक जीवंत लोकतंत्र में 'बदलाव की राजनीति' और 'सत्ता की राजनीति' के विमर्शों के बीच राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ऐसा संगठन बन चुका है, जिसने समाज जीवन के हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। उसके स्वयंसेवकों के उजले पदचिन्ह हर क्षेत्र में सफलता के मानक बन गए हैं। स्वयं को साँस्कृतिक संगठन बताने वाले संघ का मूल कार्य और केंद्र दैनिक 'शाखा' ही है, किंतु अब वह सत्ता– व्यवस्था में गहराई तक अपनी वैचारिक और सांगठनिक छाप छोड़ रहा है।

संघ के संस्थापक और प्रथम सरसंघचालक का सपना तो राष्ट्रीय चेतना का जागरण, साँस्कृतिक एकता का बोध और सालों की गुलामी के उपजे 'आत्मदैन्य' को हटाकर हिंदू समाज की शक्ति को पुनः प्रतिष्ठित करना था। इस दौर में डा. केशवराम बलिराम हेडगेवार ने ऐसे संगठन की परिकल्पना की, जो राष्ट्र को धर्म, भाषा, क्षेत्र से ऊपर उठाकर 'साँस्कृतिक राष्ट्रवाद' की भावना से जोड़े। संघ की शाखाएँ उसकी कार्यप्रणाली की रीढ़ बनीं। प्रतिदिन कुछ समय एक निश्चित स्थान पर एकत्रित होकर शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक प्रशिक्षण देना ही शाखा की आत्मा है। यह क्रमशः अनुशासित, राष्ट्रनिष्ठ और संस्कारित कार्यकर्ताओं का निर्माण करता है, जिन्हें "स्वयंसेवक" कहा जाता है। संघ ने "व्यक्ति निर्माण के माध्यम से राष्ट्र निर्माण" की अवधारणा को अपनाया है। इस प्रक्रिया में उसका जोर "चरित्र निर्माण" और "कर्तव्यपरायणता" पर होता है। ऐसे में विविध वर्गों तक पहुँचने के लिए संघ के विविध संगठन सामने आए, जो अलग–अलग क्षेत्रों में सक्रिय हुए, किंतु उनका मूल उद्देश्य राष्ट्र की चिति का जागरण और राष्ट्र निर्माण ही है।

संघ ने राजनीति और सत्ता के शिखरों पर बैठे लोगों से हमेशा संवाद बनाए रखा। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, बाबा साहब भीमराव आंबेडकर, जयप्रकाश नारायण, पं. जवाहरलाल नेहरू से लेकर श्रीमती इंदिरा गाँधी तक संघ का संवाद सबसे रहा। संघ 'सत्ता राजनीति' से संवाद रखते हुए भी 'सत्ता मोह' से कभी ग्रस्त नहीं रहा। 1951 में श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा जनसंघ की स्थापना में संघ का सक्रिय सहयोग था। इस पार्टी का सहयोग संघ द्वारा प्रशिक्षित अनेक प्रचारकों द्वारा किया गया। 1980 में जब भाजपा बनी, तो संघ के कई वरिष्ठ कार्यकर्ता उसमें शामिल हुए। संघ ने अपने अनेक प्रचारक और कार्यकर्ता पार्टी में भेजे और उन्हें स्वतंत्रता दी। सत्ता राजनीति में भी राष्ट्रीय भाव प्रखर हो, यही धारणा रही। एक समय था जब संघ पर गाँधी हत्या के झूठे आरोप में प्रतिबंध लगाकर स्वयंसेवकों को प्रताड़ित किया जा रहा था, किंतु संघ की बात रखने वाला कोई राजनीति में नहीं था। सत्ता की प्रताड़ना सहते हुए भी संघ ने अपने संयम को बनाए रखा और झूठे आरोपों के आधार पर लगा प्रतिबंध हटा।

चीन युद्ध के बाद इसी संवाद और देश भक्ति पूर्ण आचरण के लिए उसी सत्ता ने संघ को 1963 के गणतंत्र दिवस की परेड में आमंत्रित किया। भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ता रहे कृष्णलाल पठेला बताते हैं–"स्वयंसेवकों की 1962 के युद्ध में उल्लेखनीय भूमिका को देखते हुए ही 1963 की गणतंत्र दिवस परेड में संघ को अपना जत्था भेजने के लिए आमंत्रित किया गया था। मुझे याद है, मैं भी उस जत्थे में शामिल था और जब संघ का जत्था राजपथ पर निकला था, तब वहाँ मौजूद नागरिकों ने देर तक तालियाँ बजाई थीं। जहाँ तक मुझे याद है, उस जत्थे में 600 स्वयंसेवक पूर्ण गणवेश में शामिल हुए थे।"

संघ ने समाज जीवन के हर क्षेत्र में स्वयंसेवकों को जाने के लिए प्रेरित किया। किंतु अपनी भूमिका व्यक्ति निर्माण और मार्गदर्शन तक सीमित

रखी। सक्रिय राजनीति के दैनिक उपक्रमों में शामिल न होकर समाज का संवर्धन और उसके एकत्रीकरण पर संघ की दृष्टि रही। इस तरह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आज केवल एक संगठन नहीं, बल्कि एक वैचारिक परंपरा है। उसने भारतीय समाज में अनुशासन, संगठन और सॉँस्कृतिक चेतना का पुनर्जागरण किया है। सत्ता से उसका संवाद हमेशा रहा है और उसके पदाधिकारी राजनीतिक दलों से संपर्क में रहे हैं। इंदिरा गाँधी से भी तत्कालीन सरसंघचालक बालासाहब देवरस का संवाद रहा है। उनका पत्र इसे बताता है। इस तरह देखें तो संघ किसी को अछूत नहीं मानता, उसकी भले ही व्यापक उपेक्षा हुई हो। संघ के अनेक प्रकल्पों और आयोजनों में विविध राजनीतिक दलों के लोग शामिल होते रहे हैं। इस तरह संघ एक जड़ संगठन नहीं है, बल्कि समाज जीवन के हर प्रवाह से सतत संवाद और उस पर नजर रखते हुए उसके राष्ट्रीय योगदान को संघ स्वीकार करता है।

संघ की प्रेरणा से उसके स्वयंसेवकों ने अनेक स्वतंत्र संगठन स्थापित किए हैं। उनमें भाजपा भी है। इन संगठनों में आपसी संवाद और समन्वय की व्यवस्था भी है, किंतु नियंत्रित करने का भाव नहीं है। सभी स्वयं में स्वायत्त और अपनी व्यवस्थाओं में आत्मनिर्भर हैं। यह संवाद विचारधारा के आधार पर चलता है। समान मुद्दों पर समान निर्णय और कार्ययोजना भी बनती है। 1951 में जनसंघ की स्थापना के समय ही संघ के कई स्वयंसेवक जैसे पं. दीनदयाल उपाध्याय, अटलबिहारी वाजपेयी, नानाजी देशमुख जैसे लोग शामिल थे। 1977 में जनसंघ का जनता पार्टी में विलय हुआ, लेकिन आपसी मतभेदों और दोहरी सदस्यता के सवाल पर उपजे विवाद के कारण यह प्रयोग असफल रहा। 1980 में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के रूप में एक नए राजनीतिक दल का जन्म हुआ, जिसमें संघ प्रेरित वैचारिक नींव और सांगठनिक समर्थन मजबूत रूप से विद्यमान था।

संघ ने सत्ता या राजनीतिक दलों के सहयोग से बदलाव के बजाए, व्यक्ति को केंद्र में रखा है। संघ का मानना है कि कोई बदलाव तभी सार्थक होता है, जब लोग इसके लिए तैयार हों। इसलिए संघ के स्वयंसेवक गाते हैं–

- 'केवल सत्ता से मत करना परिवर्तन की आस।'
- 'जागृत जनता के केन्द्रों से होगा अमर समाज।'

सामाजिक शक्ति का जागरण करते हुए उन्हें बदलाव के अभियानों का हिस्सा बनाना संघ का उद्देश्य रहा है। चुनाव के समय मतदान प्रतिशत बढ़ाने और नागरिकों की सक्रिय भूमिका को सुनिश्चित करने के लिए मतदाता जागरण अभियान इसका उदाहरण है। नेता अपने स्वागत, सम्मान के लिए बहुत से इंतजाम करते हैं। संघ इस प्रवृत्ति को पहले पहचान कर अपने स्वयंसेवकों को प्रसिद्धिपरांगमुखता का पाठ पढ़ाता आया है। ताकि काम की चर्चा हो नाम की न हो। स्वयंसेवक गीत गाते हैं–

- 'वृत्तपत्र में नाम छपेगा, पहनूंगा स्वागत समुहार।'
- 'छोड़ चलो यह क्षुद्र भावना, हिन्दू राष्ट्र के तारणहार।'

सही मायनों में सार्वजनिक जीवन में रहते हुए यह बहुत कठिन संकल्प है। लेकिन संघ की कार्यपद्धति ऐसी है कि उसने इसे साध लिया है। संचार और संवाद की दुनियाँ में बेहद आत्मीय, व्यक्तिगत संवाद ही संघ की शैली है। जहाँ व्यक्ति से व्यक्ति का संपर्क सबसे प्रभावी और स्वीकार्य है। इसमें दो राय नहीं कि इन सौ सालों में संघ के अनेक स्वयंसेवक समाज में प्रभावी स्थिति में पहुँचें, तो अनेक सत्ता के शिखरों तक भी पहुँचे। स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, धार्मिक –साँस्कृतिक पुनर्जागरण और राष्ट्रवाद जैसे विषय संघ के लंबे समय से पोषित विचार रहे हैं, जिन्हें अब सरकारी नीतियों में प्राथमिकता मिलती दिखती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, राम मंदिर निर्माण, अनुच्छेद 370 हटाना और समान नागरिक संहिता जैसे निर्णय संघ की वैचारिक दिशा को ही प्रकट करते हैं। इसमें कई कार्य लंबे आंदोलन के बाद संभव हुए। किसी विषय को समाज में ले जाना और उसे स्थापित करना। फिर सरकारों के द्वारा उस पर पहल करना। लोकतंत्र को सशक्त करती यह परंपरा संघ ने अपने विविध संगठनों के साथ मिलकर स्थापित की है। संघ की प्रतिनिधि सभाओं में विविध मुद्दों पर पास प्रस्ताव बताते हैं कि संघ की राष्ट्र की ओर देखने की दृष्टि क्या है। ये प्रस्ताव हमारे समय के संकटों पर राष्ट्रीय दृष्टिकोण रखते हुए राह भी बताते हैं। अनेक बार संघ पर यह आरोप लगते हैं कि वह राजनीति को नियंत्रित करना चाहता है। किंतु विरोधी इसके प्रमाण नहीं देते। संघ का विषय प्रेरणा और मार्गदर्शन तक सीमित है। संघ की पूरी कार्यशैली में संवाद, संदेश और सुझाव ही हैं, चाहे वह सरकार किसी की भी हो। संघ राजनीति में 'आदर्शवादी कैडर और संस्कारी नेतृत्व' का निर्माण करता हुआ दिखता है। उसकी विचारधारा राष्ट्रवादी, अनुशासित और निःस्वार्थ सेवा पर आधारित है। अनेक मुद्दों पर जैसे आर्थिक नीति, उदारवादी वैश्वीकरण की दिशा पर संघ ने हमेशा अपनी अलग राय व्यक्त की है। इसमें दो राय नहीं कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भारतीय राजनीति में एक वैकल्पिक वैचारिक धारा का निर्माण किया है। उसने 'हिंदुत्व आधारित राष्ट्रीय भाव' को मुख्यधारा में स्थापित किया है और अपनी सांगठनिक शक्ति से भारतीय राजनीति को नई दिशा दी है। एक जागृत समाज कैसे निष्क्रियता छोड़कर सजग और सक्रिय हस्तक्षेप करे, यह संघ के निरंतर प्रयास हैं। पंच परिवर्तन का संकल्प इसी को प्रकट करता है।

संघ भले ही स्वयं राजनीति में न हो, पर राजनीति पर उसके विचारों का गहरा प्रभाव परिलक्षित होने लगा है। यह बदला हुआ समय संघ के लिए अवसर भी है और परीक्षा भी। उम्मीद की जानी चाहिए कि संघ अपने शताब्दी वर्ष में ज्यादा सरोकारी भावों से भरकर सामाजिक समरसता, राष्ट्रबोध जैसे विषयों पर समाज में परिवर्तन की गति को तेज कर पाएगा। संघ के अनेक पदाधिकारी इसे ईश्वरीय कार्य मानते हैं। स्पष्ट है उनके संकल्पों से भारत माँ एक बार फिर जगद्गुरू के सिंहासन पर विराजेगी, ऐसा विश्वास स्वयंसेवकों की संकल्प शक्ति को देखकर सहज ही होता है।

'(लेखक राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के जनसंचार विभाग में आचार्य एवं अध्यक्ष हैं।)'

संघ का सौ वर्षों का इतिहास "संघर्ष और सेवा-चरैवेति चरैवेति"

डॉ उमेश प्रताप वत्स

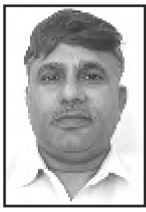

'चरैवेति चरैवेति' संस्कृत का अत्यंत प्रसिद्ध वाक्य है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'चलते रहो, चलते रहो।' यह मंत्र ऐतरेय ब्राह्मण (ऋग्वैदिक ग्रंथ) से लिया गया है। यहाँ पर इसका आशय है कि मनुष्य को निरंतर कर्म करते रहना चाहिए, रुकना नहीं चाहिए। जिसका भावार्थ है, जीवन का नियम गतिशीलता है। ठहराव ही जड़ता है और जड़ता से मृत्यु जबकि सफलता, ज्ञान, प्रगति और आत्मोन्नति सब उसी को मिलती है, जो निरंतर चलते रहते हैं। संघ के अनुसार इसलिए 'चरैवेति चरैवेति' केवल एक मंत्र नहीं, बल्कि जीवन जीने की पद्धति है अर्थात् 'रुको मत, थको मत, बस आगे बढ़ते रहो।'

चरैवेति चरैवेति यही तो मंत्र है अपना,
राष्ट्रध्वजा की शान बढ़ाना, जीवन का है सपना।
संघ की शाखा गूँज रही है, सेवाभाव का स्वर,
त्याग तपस्या साधना से, सज्जित हो हर नर।
एकात्म मानव, विश्वबंधु का, गढ़ते हम सपना,
चरैवेति चरैवेति यही तो मंत्र है अपना।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपनी स्थापना के समय से ही एक अद्भुत पथ का चयन किया। यह पथ था राष्ट्रभक्ति, चरित्र निर्माण और समाज संगठन का। वर्ष 1925 में डॉ. हेडगेवार ने जब कुछ युवाओं को लेकर संघ की नींव रखी, तब भारत दासता की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। समाज विखंडित था, आत्मविश्वास टूटा हुआ था और राष्ट्र की पहचान धुंधली हो चुकी थी। ऐसे समय में संघ ने एक दीर्घकालिक कार्य योजना बनाई, जिसमें कोई तात्कालिक राजनीतिक लक्ष्य नहीं, अपितु समाज के प्रत्येक व्यक्ति को जागृत करने का संकल्प था। यह संकल्प लेने वाले मुट्ठीभर लोग बिना धन, बिना संसाधन के अपनी ध्येयनिष्ठा के बल पर भारत माता के पावन कारज हेतु मौन तपस्वी बनकर साधना के पथ पर निकल चले।

संघ की यात्रा आसान नहीं रही। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान और स्वतंत्रता के बाद भी संघ को अनेक बाधाओं, विरोधों और आरोपों का सामना करना पड़ा। कभी प्रतिबंध झेले, कभी सत्ता की राजनीति से टकराव हुआ, तो कभी वैचारिक असहमति ने संघ को कठघरे में खड़ा किया। यहाँ तक कि संघ के प्रेरणा स्रोत तत्कालीन सरसंघचालक पूजनीय गोलवलकर गुरु जी को भी जेल में डाल दिया गया, जिन्हें स्वयंसेवक अपने प्राणों से भी अधिक प्रेम करते थे, किंतु इन सबके बावजूद संघ का ध्येय वाक्य हमेशा रहा – "चरैवेति चरैवेति" चलते रहो, निरंतर आगे बढ़ते रहो।

इन सौ वर्षों की यात्रा में संघ ने लाखों स्वयंसेवकों का निर्माण किया। शाखा के माध्यम से अनुशासन, संगठन, सेवा और राष्ट्रभक्ति का संस्कार दिया। शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामोदय, पर्यावरण, स्वदेशी उद्योग, महिला जागरण, गौसंरक्षण, आदिवासी कल्याण और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में अनगिनत सेवा कार्य खड़े किए। यही कारण है कि आज संघ विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन बन चुका है।

'चरैवेति चरैवेति' केवल संघ का मंत्र नहीं, बल्कि उसकी आत्मा है। जब–जब संघ पर संकट आया, उसने ठहरने या हार मानने की बजाए और अधिक वेग से आगे बढ़ने का संकल्प लिया। यही कारण है कि संघ का कार्य आज देश–विदेश में फैल चुका है और राष्ट्रहित का विचार जन–जन तक पहुँच रहा है। आज संघ विचारधारा को दक्षिणपंथी

कहने वाला कम्युनिज्म का चोला ओढ़े वामपंथी ग्रुप कितना सिकुड़ता जा रहा है? संघ अपने समावेशी, राष्ट्रीय विचारधारा के कारण हर क्षेत्र में व देश–विदेश में कार्य का विस्तार करता जा रहा है और यह सब हो रहा है संघ के पूर्ण रूप से समर्पित निष्ठावान कार्यकर्ताओं के बल से। आज जब संघ अपने संघर्षपूर्ण सौ वर्ष पूरे कर रहा है, तब चरैवेति चरैवेति का यह संदेश और भी प्रासंगिक हो उठता है, क्योंकि राष्ट्रनिर्माण की यात्रा अंतहीन है।

अतः संघ को और अधिक तीव्र गति से अपने सेवा कार्य को वंचित श्रेणी के प्रत्येक असहाय व्यक्ति तक पहुँचाना है तथा उन्हें सबल करके समाज की मुख्यधारा के साथ जोड़ना है। जातिवाद के इस जंजाल में जटिल परिस्थितियों के मध्य यह कार्य निःसंदेह आसान नहीं है किंतु असम्भव भी नहीं है। हाल ही में विज्ञान भवन, नई दिल्ली में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परम पूजनीय सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत जी ने त्रि दिवसीय व्याख्यानमाला 26, 27 व 28 अगस्त को शताब्दी वर्ष की तैयारी के दौरान समाज में संघ के समावेशी विचार व्यक्त किए एवं बताया कि "संघ का शताब्दी लक्ष्य : समाज, संस्कृति और राष्ट्रनिर्माण" है।

व्याख्यानमाला का ध्येय था आने वाले 10 वर्षों की योजना और दिशा को समाज के सामने रखना। समाज और राष्ट्र को जोड़ना। संघ केवल संगठन नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने की साधना है। संघ समाज के माध्यम से ही भारत को विश्वगुरु के परम वैभव पर ले जाने का उद्यम कर रहा है, ताकि वसुधैव कुटुम्बकम् का ध्येय पूर्ण हो सके। इसके लिए पंच परिवर्तन को माध्यम बनाया गया है। संघ का पंच परिवर्तन यही बताता है कि "परिवार से समाज और समाज से राष्ट्र" की यात्रा में पाँचों क्षेत्र आधार स्तंभ हैं। यदि हर स्वयंसेवक व देश के नागरिक इन पाँच बिंदुओं पर परिवर्तन लाते हैं, तो भारत वास्तव में समर्थ, समरस और स्वावलंबी राष्ट्र बन सकता है। कुटुम्ब प्रबोधन के माध्यम से ही संस्कारों की पुनर्स्थापना करनी है। परिवार ही संस्कार और चरित्र का प्रथम विद्यालय है। परिवार में संवाद, संस्कार, आत्मीयता और कर्तव्यबोध को पुनः जागृत करना। टूटते परिवारों और पाश्चात्य प्रभाव से बचाकर परिवार संस्था को सुदृढ़ बनाना ही इसका उद्देश्य है। पर्यावरण संरक्षण के अन्तर्गत प्रकृति के बिना जीवन असंभव है। वृक्षारोपण, जल–संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण, गोसंरक्षण आदि ये सब करणीय कार्य हैं।

"प्रकृति ही परमात्मा का रूप है" – इसे सुरक्षित रखना ही धर्म है। स्वदेशी जीवनशैली, आर्थिक और सांस्कृतिक स्वाधीनता के लिए स्वदेशी अपनाना आज अति आवश्यक है। भारतीय उद्योग, उत्पाद और परंपरागत ज्ञान को बढ़ावा देना स्वदेशी भाव को और अधिक दृढ़ कर सकता है। स्वदेशी अपनाकर ही हम परावलंबन छोड़कर आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ सकते हैं।

सामाजिक समरसता के अंतर्गत समाज में जाति, भाषा, प्रांत और वर्ग के आधार पर जो भेदभाव हैं, उसे समाप्त करना अत्यंत आवश्यक है। हम सब एक हैं, हिंदू समाज एक है, इसका भाव सभी में रहना ही चाहिए। नागरिक कर्तव्यों का पालन करना ही चाहिए। कर भुगतान, मतदान, अनुशासन, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, राष्ट्रहित में आचरण होने से ही हम देश को उन्नति के मार्ग पर ले जा सकते हैं। जब हर व्यक्ति जिम्मेदार नागरिक बनेगा, तभी राष्ट्र सशक्त होगा।

व्याख्यानमाला के माध्यम से शिक्षा, सेवा, तकनीकी, पर्यावरण और संस्कृति जैसे क्षेत्रों में व्यापक दृष्टिकोण रखा गया। संघ को लेकर मुस्लिम समुदाय अथवा अन्य किसी भी समाज में विपरीत विचारों के पोषकों ने जो भ्रांतियाँ फैला रखी हैं संवाद के माध्यम से उनका निवारण करने पर जोर दिया गया। संघ को लेकर समाज में बनी गलतफहमियाँ दूर करना तथा विभिन्न वर्गों, मतों और समुदायों से संवाद बढ़ाने पर जोर दिया गया। नवीन चुनौतियाँ और समाधान, तकनीकी बदलाव, परिवार विघटन, पर्यावरण संकट, साँस्कृतिक आक्रमण और अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य पर विस्तृत चर्चा की गई। संघ का स्पष्ट दृष्टिकोण है कि स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और साँस्कृतिक मूल्यों पर आधारित आधुनिक भारत का निर्माण ही हमारा लक्ष्य है। देश के भविष्य युवाओं को संगठन, सेवा और राष्ट्रकार्य से जोड़ना ताकि वे अपने अथक प्रयास से भारत को विश्वगुरु बनाने की राह पर अग्रसर कर निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति में अपना अमूल्य योगदान दे सकें।

"संघ की शताब्दी यात्रा केवल स्मरण नहीं, बल्कि संकल्प है–चरैवेति चरैवेति, चलते रहो, संगठित समाज ही सशक्त राष्ट्र है।" समाज संगठन का कार्य निरंतर तप और साधना मांगता है और यही साधना का मंत्र है – चरैवेति चरैवेति। संघ की शताब्दी यात्रा यह प्रमाणित करती है कि सत्य, संगठन और सेवा पर आधारित कार्य कितना भी विरोध झेले, वह कभी रुकता नहीं। संघ का अस्तित्व इसी निरंतरता की देन है। सचमुच, संघ के सौ वर्षों का इतिहास एक ही वाक्य में समाया है – "संघ का संघर्ष और सेवा – चरैवेति चरैवेति।"

umeshpvats@gmail.com

पंकज जगन्नाथ जायसवाल

सामाजिक समरसता का महत्व

आरएसएस ने अपनी स्थापना के बाद से कभी भी जाति के आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं किया है। 'समता', 'ममता' और 'समरसता' में विश्वास, जो भौतिक और भावनात्मक दोनों रूप से अपनत्व की भावना से जुड़ा है, संघ के स्वयंसेवकों द्वारा लंबे समय से अपनाया गया है। सत्य का प्रचार करके और उसे जमीनी स्तर पर लागू करके, आरएसएस ने हमारे पूरे देश में जाति भेद और अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए अथक प्रयास किए हैं। अपने शताब्दी वर्ष में, आरएसएस ने महान राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिए 'पंच परिवर्तन' नामक एक पाँच–सूत्री योजना पर काम करना शुरू किया। सामाजिक समभाव उनमें से एक है। आरएसएस का जातियों और समुदायों के समग्र समाज के साथ संबंधों को समझाने का अपना तरीका है। दृष्टिकोण यह है कि शरीर के सभी अंगों की तरह, प्रत्येक वर्ग महत्वपूर्ण है और वे सभी एक–दूसरे पर निर्भर भी हैं। जिस प्रकार शरीर के एक अंग का पूरे शरीर के साथ संबंध होता है, उसी प्रकार समाज का प्रत्येक वर्ग समग्र समाज से जुड़ा होता है। यह संबंध परस्पर और संपूर्ण शरीर से एक साथ जुड़ा हुआ है। इसलिए श्रेष्ठता–हीनता के संघर्ष का समाधान इस परस्पर निर्भरता से होता है, जो सह–कार्य और पारस्परिकता की भावना से पूरित होती है।

इस बिंदु पर काम करना इतना जरूरी क्यों है ?

विदेशी आक्रमणकारियों ने हिंदुओं की कमजोरियों और दरारों का गहन शोध और विश्लेषण किया। हिंदू समाज को विभाजित करने और अपनी सत्ता को लंबे समय तक बनाए रखने के लिए, उन्होंने जहरीले हथकंडे अपनाए। उनकी मुख्य रणनीति हिंदुओं को जाति के आधार पर बाँटना था, जिसमें वे सफल भी रहे ताकि हिंदू एक–दूसरे से नफरत करने लगे। एक महान राष्ट्र के रूप में, हमने सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक रूप से बहुत कष्ट सहे हैं। इसी मानसिकता के कारण हम एक समाज और एक राष्ट्र के रूप में आज भी कष्ट झेल रहे हैं। एंगस मैडिसन की पुस्तक के अनुसार, ब्रिटिश आक्रमण से पहले सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के लिहाज से सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था ब्रिटिश शासन के दौरान तबाह हो गई थी, और उनके भारत छोड़ने के बाद हमारी जीडीपी 3 प्रतिशत से भी कम हो चुकी थी।

अँग्रेजों ने जातिगत विभाजन के कारण कमजोर हिंदुओं का फायदा उठाया और सोना और अन्य प्राकृतिक संसाधन, कृषि उत्पाद, हमारे आदिवासी भाइयों–बहनों द्वारा वर्षों से अर्जित वन संपदा चुरा ली। उन्होंने कई हिंदुओं का धर्मांतरण भी किया और सामाजिक ताने–बाने को नष्ट कर दिया। इस्लामी चरमपंथियों ने भी कई जगहों पर हिंदुओं पर हिंसक हमला करने के लिए हिंदू विभाजन का इस्तेमाल किया है और कई ईसाई पादरियों ने हिंदुओं का धर्मांतरण करने और हमारे अद्भुत राष्ट्र और संस्कृति के खिलाफ उनके मन में जहर घोलने के लिए इसका इस्तेमाल किया है और करते आ रहे हैं। वैश्विक बाजार की गहरी ताकतें आंतरिक दुश्मनों के साथ इन रणनीतियों का इस्तेमाल करके हिंदुओं को जाति के आधार पर विभाजित करती रहती हैं। जहाँ तक हिंदू समुदाय की बात है, जातिगत पूर्वाग्रह को दूर किया जाना चाहिए,

क्योंकि हिंदू समाज जाति के आधार पर इतना विभाजित है कि एक बड़ी खाई बन गई है। जातिगत भेदभाव समाज में असहयोग की भावना पैदा करता है, जिसके परिणामस्वरूप वर्ग संघर्ष होता है, जो अंततः विनाश का कारण बनता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत को एक हिंदू बहुल राष्ट्र के रूप में नामित किया गया है, जो दुनियाँ भर के सभी हिंदुओं के लिए गर्व का विषय है। बाहरी और आंतरिक शत्रु वर्तमान में विनाशकारी कृत्यों को अंजाम देने के लिए हिंदुओं की कमजोरियों का फायदा उठा रहे हैं।

हिंदुओं की कमजोरी के कारण, भारत में अन्य समुदायों की जनसँख्या के आँकड़े लगातार बढ़ रहे हैं, जो अंततः भारत के विघटन का कारण बन सकते हैं। जाति–आधारित विभाजन इसके लिए अप्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार है और भारत को अपने समग्र नेतृत्व और विकास के मामले में आगे बढ़ने से पहले इसे समाप्त करना होगा।

भारत में जाति एक सार्वभौमिक घटक है। हिंदू बहुसँख्यक हैं और लोगों को जातियों में बाँटकर या जातिवाद को बढ़ावा देकर ही राजनीतिक सत्ता हासिल की जा सकती है या धर्मांतरण कराया जा सकता है। ईसाइयों और मुसलमानों में भी जातियाँ होती हैं, जिनमें ऊँची, नीची और शुद्ध–अशुद्ध जातियों का भेद होता है–यह सबसे बुरा भेदभाव है। हालाँकि डीप स्टेट वैश्विक व्यापारिक ताकतें और कई राजनीतिक दल मानते हैं कि हिंदुओं को बाँटकर रखना फायदेमंद है। अगर हम सचमुच अपने देश को 2047 तक विकसित होते और 'विश्वगुरु' बनते देखना चाहते हैं, तो हमें एकजुट होना होगा और अपनेपन की गहरी भावना रखनी होगी।

देखिए, तृतीय सरसंघचालक, बालासाहेब देवरस जी ने अस्पृश्यता के बारे में क्या कहा था?

यदि जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता को समाप्त करना है, तो उसमें विश्वास रखने वालों में परिवर्तन लाना होगा। ऐसे लोगों पर हमला करने या उनसे लड़ने के बजाय, कोई दूसरा विकल्प हो सकता है। मुझे संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार के साथ काम करने का सौभाग्य मिला। वे दृढ़ता से कहते थे, 'हमें अस्पृश्यता में विश्वास करने या उसका पालन करने की आवश्यकता नहीं है।' इसी आधार पर उन्होंने संघ शाखाएँ, कई अभ्यास वर्ग और कार्यक्रम भी विकसित किए। उस समय भी ऐसे लोग थे, जो, उनसे भिन्न विचार रखते थे। हालाँकि डॉक्टर जी को विश्वास था कि आज नहीं तो कल वे निःसंदेह उनके विचारों से सहमत होंगे। परिणामस्वरूप उन्होंने इस बारे में कोई हंगामा नहीं किया, किसी से झगड़ा नहीं किया, या, किसी की अवज्ञा के लिए उसके विरुद्ध कोई नकारात्मक कार्रवाई नहीं की, क्योंकि उन्हें इस बात में कोई संदेह नहीं था कि सामने वाले व्यक्ति के भी इरादे नेक हैं। कुछ आदतों के कारण, शुरुआत में वे हिचकिचा सकते थे, लेकिन पर्याप्त समय मिलने पर, वे निःसंदेह अपनी गलतियों से सीखेंगे।

शुरुआती दिनों में एक संघ शिविर में, कुछ भाइयों ने अनुसूचित जाति समुदाय के भाइयों के साथ भोजन करने में झिझक व्यक्त की। डॉक्टर जी ने उन्हें नियम नहीं बताए और न ही शिविर से निष्कासित किया। बाकी सभी स्वयंसेवक, डॉक्टर जी और मैं, भोजन के लिए साथ बैठे। जो झिझक रहे थे, वे अलग बैठे। लेकिन बाद में, दूसरे भोजन के दौरान, वही भाई स्वयं आकर हम सबके साथ बैठे। –स्वर्गीय बाला साहेब देवरस जी, पुणे वसंत व्याख्यानमाला (1974)

जब महात्मा गाँधी और बाद में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने आरएसएस शिविरों का दौरा किया, तो वे इस बात से संतुष्ट थे कि आरएसएस में जाति या सामाजिक पृष्ठभूमि के विवरण के बारे में न तो पूछा जाता है और न ही उसे कोई महत्व दिया जाता है। लगभग 23 साल पहले डॉ आंबेडकर की जन्म शताब्दी के दौरान, आरएसएस के कई लोगों ने यह सुनिश्चित किया कि उनके घरों में डॉ. अंबेडकर का चित्र लगे। पुणे के गिरीश प्रभुणे जैसे कई लोग पारधी और इसी तरह के विमुक्त, खानाबदोश आदिवासी

डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर की जातिगत पूर्वाग्रह के विरुद्ध लड़ाई का उद्देश्य हिंदुओं को एकजुट करना था

बाबा साहेब हिंदू विरोधी नहीं थे, लेकिन वे हिंदू धर्म की कुछ कुरीतियों और अनुचित रीति–रिवाजों के विरोधी थे। अगर उन्हें हिंदू धर्म से नफरत होती, तो वे हिंदू धर्म को और कमजोर करने के लिए इस्लाम या ईसाई धर्म अपना लेते। हालाँकि उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया, क्योंकि उसकी मान्यताएँ हिंदू धर्म से बहुत मिलती–जुलती है। हिंदू धर्म के कई आलोचक हिंदू धर्म के विरुद्ध उनकी कुछ पंक्तियों का उल्लेख करते हैं, लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि वे उस समय की प्रतिक्रियाएँ थीं और प्रतिक्रियाएँ क्षणिक भावनाएँ होती हैं, जो किसी के चरित्र या विचार प्रक्रिया को निर्धारित नहीं कर सकतीं। अधिकांश प्रतिक्रियाएँ कुछ प्रथाओं के प्रति क्रोध से उत्पन्न हुई थीं, इसलिए यह दावा करना निरर्थक है कि वे हिंदू विरोधी थे। जब हम अपने परिवार के सदस्यों के लिए कठोर शब्दों का प्रयोग करते हैं, तो हम ऐसा प्रेम से करते हैं, ताकि रचनात्मक परिवर्तन लाया जा सके, जैसा कि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने किया था। उस समय उनकी प्रसिद्धि और शक्ति उन्हें हिंदुओं और भारत को काफी नुकसान पहुँचा सकती थी, हालाँकि वे एक देशभक्त थे और तथ्यों से अवगत थे। क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि अगर उन्होंने ईसाई धर्म या इस्लाम धर्म अपना लिया होता, तो क्या परिणाम होते ?

वे जानते थे कि हर धर्म और विचारधारा में खामियाँ होती हैं, जिन्हें दूर करने और सुधारने की जरूरत होती है। उन्हें उम्मीद थी कि हिंदू सामाजिक असमानता को दूर करने के लिए कदम उठाएँगे, इसलिए उन्होंने हिंदू नेताओं के लिए सुधारात्मक कार्रवाई करने हेतु एक समय–सीमा तय की। हालाँकि हिंदुओं में प्रबल जातिगत विभाजन और मुगलों व अँग्रेजों द्वारा समय–समय पर पोषित गुलामी की मानसिकता ने हिंदुओं के लिए सामाजिक असमानता के इस मुद्दे पर विजय पाना असंभव बना दिया। डॉ. अंबेडकर ने महसूस किया कि काँग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टियों द्वारा खड़ी की गई बाधाएँ भी हिंदुओं के पतन में योगदान दे रही थीं।

समुदायों के उत्थान के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं।

संघ और उससे जुड़े संगठन और संस्थान समाज के हाशिए पर पड़े समूहों का किस प्रकार कल्याण करते हैं ?

कुछ दशक पहले आरएसएस के सरसंघचालक पूज्य श्री गुरुजी ने प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री रमाकांत (बाला साहेब) देशपांडे को आदिवासी समाज की सेवा और आर्थिक विकास हेतु कल्याण आश्रम की स्थापना के लिए प्रेरित किया था। आज वह बीज एक जन – आंदोलन बन चुका है। अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम ने अस्पतालों, विद्यालयों, छात्रावासों, बालवाड़ियों, प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों और विभिन्न अन्य मानवीय गतिविधियों के माध्यम से आदिवासी भारत के लगभग हर कोने में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। अंडमान से लेह तक और अरुणाचल प्रदेश से नीलगिरि की पहाड़ियों तक समर्पित कार्यकर्ताओं, पुरुषों और महिलाओं का एक व्यापक नेटवर्क मौजूद है, जिन्होंने आदिवासियों के जीवन में गहरे बदलाव लाए हैं।

विडंबना यह है कि जहाँ कुछ औपनिवेशिक 'विद्वान' और मानवशास्त्री विभिन्न जनजातियों को 'आपराधिक जनजातियाँ', 'शिकारी' आदि कहते रहे, वहीं आक्रामक धर्मांतरण करने वालों ने तिरस्कारपूर्वक उन्हें विधर्मी और मूर्तिपूजक कहा और स्वयं को उनकी 'पापी' आत्माओं का एकमात्र मुक्तिदाता बताया।

हालाँकि संघ और अन्य सहयोगी संगठनों ने आदिवासियों के वास्तविक इतिहास और उनके प्रभु राम और कृष्ण के समर्थन को प्रदर्शित किया, ब्रिटिश शासन और अन्याय के विरुद्ध उनके युद्ध को। हर वर्ष, आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों को याद किया जाता है और उन्हें श्रद्धापूर्वक सम्मानित किया जाता है। समाज को यह स्पष्ट रूप से समझना चाहिए कि उपनिवेशवादियों और साम्यवादियों ने हमेशा आदिवासियों का तिरस्कार और अपमान किया है जबकि संघ और उसके सहयोगी संगठनों ने हमेशा उन्हें अपना माना है।

वनवासी कल्याण आश्रम पूरे भारत में विभिन्न मानवीय गतिविधियों के माध्यम से जनजातियों (आदिवासियों) के कल्याण को बढ़ावा देता है। 397 आदिवासी जिलों में से 338 में मूल निवासियों की सहायता के लिए विभिन्न पहल की गई है। 52,323 गाँवों में लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए काम किया जा रहा है और भविष्य में और भी गाँवों को इसमें शामिल किया जाएगा। आर्थिक गतिविधियों के अलावा स्थानीय संस्कृति को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। वनवासी कल्याण आश्रम का लक्ष्य प्रत्येक आदिवासी भाई–बहन के सम्पूर्ण विकास के लिए कार्य करना है। इसके अलावा विभिन्न स्थानों पर अन्य खेल सुविधाओं का निर्माण भी किया जा रहा है।

सेवा भारती

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्रेरित एक सामाजिक सेवा संगठन, राष्ट्रीय सेवा भारती, शहरी मलिन बस्तियों, दूरदराज के इलाकों और आदिवासी समुदायों में वंचितों के लिए स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और रोजगार क्षमता में सुधार लाने के उद्देश्य से 35,000 से ज्यादा परियोजनाओं का प्रबंधन करता है। इस संगठन की स्थापना 1989 में हुई थी, जब संघ के तीसरे सरसंघचालक बालासाहेब देवरस ने 1979 में दिल्ली में एक बैठक बुलाई थी, ताकि एक ऐसा संगठन बनाया जा सके, जो पूरी तरह से स्वास्थ्य, सेवा और शिक्षा के क्षेत्र में गरीबों और वंचितों के लिए काम करे।

राष्ट्र की महानता को पुनर्स्थापित करने के लिए, आइए हम जातिगत भेदभाव को समाप्त करके हिंदुओं को एकजुट करें।

pankajjayswal1977@gmail.com

सामाजिक समरसता संगोष्ठी

'विश्व हिंदू परिषद सोनीपत हरियाणा'। आज जीवन कॉलेज के सभागार में सामाजिक समरसता कार्यक्रम अत्यंत भावपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। इस आयोजन में सर्व हिंदू समाज के विभिन्न बिरादरी के लगभग 700 से अधिक प्रबुद्ध जनों की उपस्थिति रही, जिसने कार्यक्रम की गरिमा को और बढ़ाया। मुख्य उद्बोधन माननीय विनायक राव देशपांडे जी, केंद्रीय सह – संगठन महामंत्री, विश्व हिंदू परिषद द्वारा दिया गया। उन्होंने सामाजिक समरसता विषय का गहन वर्णन करते हुए अनेकों प्रेरक उदाहरण महापुरुषों के जीवन से प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय प्रांत अध्यक्ष श्री पवन जी ने की। मंच पर उनके साथ पधारे पूज्य श्री दयानंद सरस्वती जी मुरथल, महामंडलेश्वर श्री सीताराम जी महाराज, श्री राधेश्याम

जी संगठन मंत्री व विभाग मंत्री श्री सुभाष जी, माननीय विभाग संचालक श्री निर्मल जी विशेष रूप से, कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री जोगिंदर वाल्मीकि जी (पूर्व प्रधान, सफाई यूनियन, वाल्मीकि समाज) रहे, जिन्होंने अपनी उपस्थिति से समरसता का सशक्त संदेश दिया। इस अवसर पर विश्व हिंदू परिषद की संपूर्ण जिला कार्यकारिणी, प्रखंड कार्यकारिणी एवं सैकड़ों कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे। समरसता का यह संगम समाज में एकता, बंधुत्व और संगठन की शक्ति का जीवंत प्रतीक रहा।

डॉ. प्रवेश कुमार

संघ का कुटुम्ब प्रबोधन कार्य ''इलेक्ट्रॉनिक गैजेट व्रत'' की बात करता है, एक साथ भोजन, एक साथ शाम की पूजा। यह सभी क्रियाकलाप कुटुम्ब के बीच सौहार्द्र पैदा करेगा। इस प्रकार से एक स्वस्थ राष्ट्र के स्वस्थ समाज निर्माण हेतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इन पंच परिवर्तनों की बात की है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ देश, समाज सेवा में पिछले 10 दशकों से सक्रिय है, नागपुर के मोहते के बाड़े से कुछ बालकों से शुरू हुई शाखा और विचार मंथन रूपी बीज से अंकुरित संघ ने आज वटवृक्ष का स्वरूप ले लिया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ वर्तमान में 3 दर्जन से ज्यादा स्वतंत्र संगठन व संघ के स्वयंसेवकों द्वारा संचालित विभिन्न अन्य संगठन आदि को मिला दिए जाएँ, तो इनकी सँख्या सैकड़ों में है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और पंच परिवर्तन

संघ में अनायास चर्चा में आ जाता है कि संघ कुछ नहीं करता और स्वयंसेवक कुछ छोड़ता नहीं है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने आज अपने विराट स्वरूप को प्राप्त किया है। इस सबके बावजूद भी कुछ लोगों का विचार संघ को लेकर अच्छा नहीं है। जिस संघ पर कई बार प्रतिबंध काँग्रेस शासन के द्वारा लगाया गया, परंतु जब भी देश और समाज को संघ की आवश्यकता हुई, तभी वह मजबूती से खड़ा हुआ।

पाकिस्तान के विभाजन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका को उद्धरित करने का कार्य वरिष्ठ लेखक खुशवंत सिंह ने अपने मशहूर नावल ''मीनू–माजरा (ट्रेन टू पाकिस्तान) में किया है। इसी प्रकार ए आर बाली जी ने अपनी पुस्तक ''विभाजन की विभीषिका'' में भी संघ की भूमिका को बताया है कि किस प्रकार से लाहौर के काँग्रेस के नेताओं ने संघ से सहयोग लिया। वर्ष 1962 में चीन युद्ध के दौरान भारत में आंतरिक सुरक्षा एवं यातायात आदि की व्यवस्था की जिम्मेदारी संघ ने निभाई। इसी के चलते वर्ष 1963 के गणतंत्र दिवस परेड में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने सेना की भाँति ही परेड में भाग लिया था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने आपातकाल को झेला, उसके बाद भी संघ पर प्रतिबंध लगा। लेकिन संघ निरंतर अपनी यात्रा में चलायमान है। आज देश बहुत तेजी से तरक्की कर रहा है, ऐसे में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने स्वयंसेवकों को समाज में पंच परिवर्तन हेतु आग्रह किया है। यह पंच परिवर्तन समाज परिवर्तन के बिंदु हैं, आयाम हैं, जो व्यक्ति, समाज, चरा–चर जगत के कल्याण में अधिक कारगर होंगे, ऐसा संघ मानता है। जिसमें प्रथम है ''स्व'' का बोध होना, जिसका अर्थ है कि हम हैं कौन, हमारी अस्मिता क्या है, हमारा आचरण क्या है। हमारा जीवन व्यवहार कैसा है, क्या हम हमारे स्व को मानते हैं, स्वदेशी, स्वधर्म मूल्यों के आधार पर हम अपने जीवन को जी पा रहे हैं ? अब मन में प्रश्न आ जाता है कि यह स्व क्या है, स्व हमारे धर्म के साथ जुड़ा जिस स्व धर्म को भगवान कृष्ण जी ने गीता में बताया है ''श्रेयान स्वधर्मो विगुणः परधर्मात स्वनुष्ठितात। स्वधर्मो निधनं श्रेयःपरधर्मो भयवाहः। (3/35)।

भगवान कृष्ण जी ने कहा स्वधर्म पालन, शास्त्र अनुसार आचरण करना, परसेवा, परहित को अपने कार्य में समाहित करना यह मूल तत्व ही स्व है। स्व चिन्तन के द्वारा हमको हमारे कर्तव्य भाव का बोध होना इसमें शामिल है। सत्यता और शुचिता संतोषम परम सुखम यह हमारा अपना मूल है। हमारा स्व यह हमारा हिन्दुत्व भी है, जो सबके साथ–साथ चलने में विश्वास करता है। एकम सत् विप्राः बहुदा वदंति की बात करता है। भारत का जनमानस किसी शोषण की संस्कृति को नहीं मान सकता, इसलिए हम मजबूत हुए, तो दुनियाँ पर कब्जा करना हमारा ध्येय नहीं बना। बल्कि हमने धर्म परायण यह समाज, राष्ट्र, विश्व बने, इस विचार का प्रचार –प्रसार किया।

सस्टैनेबल विकास की अवधारणा हमारे स्व का ही विचार है। जितनी आवश्यकता उतना लेना बाकी अन्यों के

लिए छोड़ देना। समाज में सभी की सहयोग, सहायता करना हमारा सनातन कहता है ''शत हस्त समाहर सहरत्र हस्त संकिर'' इसका अर्थ है सौ हाथों से उपार्जन करो, हजार हाथों से दान करो यही भारतीय चिंतन है। इसी प्रकार से द्वितीय है नागरिक कर्तव्य। अब यह नागरिक कर्तव्य हमें हमारे समाज का हिस्सा होने के नाते से जो हमारे दायित्व हैं उनका बोध कराता है।

हम सभी भारत के नागरिक हैं, इस नाते से हमारे कुछ कर्तव्य हैं जैसे कि लोकतंत्र में अपनी आस्था रखना, सरकार, संविधान द्वारा बने नियमों का पालन करना। जिस समाज में हम रहते हैं वह स्वच्छ रहे, प्रदूषण मुक्त हो, सड़कें आदि साफ रहें, यह सब हमारा नागरिक कर्तव्य है। हम इनका ध्यान रखें, हम देखें कि जब देश के प्रधानमंत्री ने ''स्वच्छता अभियान'' का आवाहन किया। तब से देश भर में सभी ने अपने आचरण में थोड़ा ही सही परिवर्तन तो किया है। यहाँ–वहाँ कूड़ा फेंकने से अब लोग बचते हैं, यह हमारा नागरिक कर्तव्य ही है कि हम समाज को स्वच्छ रखें। भारत का चिंतन हमारा ''स्व'' भी यही कर्तव्य बोध हमें कराता है।

तीसरा आयाम है पर्यावरण, हम हमारे भारत के मानस को समझें, जहाँ हमारी माँ हमें कहती है, पेड़ नहीं काटना चाहिए, रात्रि में पेड़ नहीं छूना। हम पीपल, बरगद और नीम की पूजा करते हैं। हमारे पुराण बताते हैं कि हर वृक्ष में कोई ना कोई देवता रहता है। जैसे शमी का पेड़ शनि देव को समर्पित है, वहीं तुलसी जी में माँ लक्ष्मी एवं आंवला वृक्ष में विष्णु जी का वास माना जाता है। इसी प्रकार नदियों, पहाड़ों आदि के प्रति हिंदुओं की श्रद्धा अधिक है। हमारे बहुत त्योहार पेड़ों की पूजा के साथ जुड़े हैं, तुलसी पूजा, वट सावित्री ऐसा तमाम है। हिन्दू प्रकृति पूजक अपने स्वभाव में रहा है, लेकिन आज हमने विदेशी संस्कृति के प्रभाव में प्रकृति प्रदत्त तमाम वनस्पति, वृक्ष आदि का दोहन अंधाधुंध करना प्रारंभ कर दिया है। जिसका कारण है बेमौसम बारिश, कभी बारिश ही ना होना, पहाड़ों का गिरना आदि–आदि हो रहा है। नागरिक समाज को प्रकृति प्रेमी होने के भाव का जागरण करना यह आज संघ नागरिक कर्तव्य के रूप में समाज को बता रहा है।

इसी प्रकार समाज में व्याप्त ऊँच–नीच का भाव, अस्पृश्यता आदि एक बड़ी समस्या है। संघ मानता है कि बिना संपूर्ण समाज की सम्पूर्ण इकाइयों को साथ लिए हम कोई भी बदलाव नहीं कर सकते हैं। समाज को एकरस करने हेतु सामाजिक समरसता को अपने स्वभाव में लाना ही होगा। यह सामाजिक समरसता जबरन या कानून से नहीं हो सकती, बल्कि यह व्यक्ति ने स्वयं के द्वारा अपने आचरण में लाने से ही होने वाली है। पूज्य बाबा साहब अम्बेडकर एवं संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी ने कहा कि सामाजिक समरसता कानून नहीं बल्कि व्यवहार का पक्ष है''। हम हमारे स्वभाव में भारत के उस आदर्श को लें, जहाँ प्रभु राम केवट को अपने राज भवन में रहने को कहते हैं, बाकी सभी को जाने को कहते हैं, जो राम शबरी के जूठे बैरों को बड़े चाव से खाते हैं। यह हमारा दर्शन ही है, जो शवपाक की संतान मातंग को महर्षि मान लेते हैं, वेद व्यास, महर्षि वाल्मीकि कितने ही उदाहरण हमारे सामने हैं, नारद सूत पुत्र होकर भी पूजनीय हैं। इसलिए विराट हिन्दू समाज के रूप में ही देखने की दृष्टि का निर्माण समाज में बने। एक मंदिर, एक जल स्त्रोत, एक शमशान इनमें किसी भी प्रकार का कोई भेद ना हो। समाज में सामाजिक समरसता लाने हेतु संघ के कार्यकर्ता समाज में चर्चा संपर्क से वातावरण निर्माण करें।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने पाँच परिवर्तन में कुटुम्ब को अपने कार्य के केंद्र में रखा है। एक बच्चा सेवा, संस्कार, सुरक्षा समाज के प्रति दायित्व बोध यह सभी कुछ अपने परिवार में कुटुम्ब में ही सीखता है। लेकिन आधुनिक समय में रोजगार की तलाश और जीवन की व्यस्तता में हमने परिवार, कुटुम्ब को भुला दिया है। कुटुम्ब में दादा–दादी से बच्चे काफी कुछ सीखते हैं, लेकिन आज परिवारों में दादा–दादी वृद्धा आश्रम में रह रहे हैं। जिन परिवारों में माता, पिता, दादा–दादी, बच्चे हैं भी तो वह आपस में बैठ नहीं पा रहे हैं।

इलेक्ट्रॉनिक गैजेट के साथ व्यस्तता आज आम है। इसलिए संघ का कुटुम्ब प्रबोधन कार्य ''इलेक्ट्रॉनिक गैजेट व्रत'' की बात करता है, एक साथ भोजन, एक साथ शाम की पूजा। यह सभी क्रियाकलाप कुटुम्ब के बीच सौहार्द्र पैदा करेगा। इस प्रकार से एक स्वस्थ राष्ट्र के स्वस्थ समाज निर्माण हेतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इन पंच परिवर्तनों की बात की है।

(लेखक सहायक प्रोफेसर, तुलनात्मक राजनीति और राजनीतिक सिद्धांत का केन्द्र, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली।)

(वीर अर्जुन से साभार)

विश्वगुरु बनने का नया अध्याय लिखता भागवत का उद्बोधन

ललित गर्ग

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के शताब्दी वर्ष पर दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित वार्षिक व्याख्यानमाला केवल एक उत्सव मात्र नहीं था, बल्कि यह आयोजन भारत की आत्मा और उसके भविष्य की एक गहन घोषणा थी। संघ सरसंघचालक मोहन भागवत ने इन व्याख्यानों में जिस स्पष्टता और गंभीरता से अपने विचार रखे, उन्होंने संघ की विचारधारा के प्रति व्याप्त भ्रांतियों का निवारण करने के साथ–साथ भारत को विश्वगुरु बनाने की दिशा में एक नया क्षितिज भी उद्घाटित किया। यह आयोजन संघ के सौ वर्ष की साधना का मूल्यांकन ही नहीं बल्कि आने वाले सौ वर्षों की दिशा का भी उद्घोष था। नई इबारत लिखते हुए भागवत ने स्पष्ट कहा कि संघ की कार्यप्रणाली का सार है, नए मनुष्य का निर्माण। यह विचार सुनने में सरल लग सकता है, किंतु इसके निहितार्थ अत्यंत गहरे हैं। समाज और राष्ट्र की सारी समस्याओं का मूल व्यक्ति के भीतर छिपा है। इसीलिए देश के सभी वर्गों को एकसूत्र में जोड़ने के संकल्प के साथ संघ आगे बढ़ेगा, क्योंकि जब तक व्यक्ति का चरित्र, दृष्टि और आचरण नहीं बदलते, तब तक कोई भी व्यवस्था स्थायी रूप से परिवर्तित नहीं हो सकती। संघ व्यक्ति–निर्माण के माध्यम से समाज और राष्ट्र को बदलने की दीर्घकालिक साधना कर रहा है। यही कारण है कि संघ के कार्य का परिणाम केवल शाखाओं या कार्यक्रमों में नहीं मापा जा सकता, बल्कि उस अदृश्य लेकिन ठोस नैतिक शक्ति में देखा जा सकता है, जो धीरे–धीरे समाज की दिशा बदल रही है।

हिंदुत्व को लेकर जो भ्रांतियाँ फैलाई जाती रही हैं, उन्हें भी भागवत ने तार्किक ढंग से दूर किया है। उन्होंने कहा कि हिंदुत्व किसी संकीर्ण परिभाषा का नाम नहीं है। यह कोई धर्म विशेष की पूजा–पद्धति या संप्रदाय नहीं है। हिंदुत्व भारतीय जीवन दृष्टि है, वह व्यापक सांस्कृतिक धारा है, जिसमें करुणा, समरसता, सेवा, अहिंसा, सत्य और आत्मानुभूति का सम्मिलन है। हिंदुत्व सबको जोड़ता है, किसी को अलग नहीं करता। यह भारत की आत्मा है और इसी आत्मा के बल पर भारत को विश्वगुरु बनने की पात्रता प्राप्त हो सकती है। इस स्पष्ट व्याख्या ने उस संदेह को भी दूर किया कि संघ का हिंदुत्व राजनीतिक या सत्ता प्राप्ति का साधन है। वास्तव में यह संपूर्ण मानवता को एक सूत्र में बांधने वाली दृष्टि है, जिसमें भेदभाव के लिए कोई स्थान नहीं है। दूसरे दिन के वक्तव्य में भागवत ने और गहराई से विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने पंचकर्म की चर्चा करते हुए कहा कि जैसे आयुर्वेद में पंचकर्म शरीर की शुद्धि का साधन है, वैसे ही समाज की शुद्धि और पुनर्निर्माण के लिए भी पंचकर्म आवश्यक है। उन्होंने पांच आयाम बताए–चरित्र निर्माण, संगठन निर्माण, समरसता, गरीब का उत्थान और आध्यात्मिक जागरण। यह पांचों पहलू किसी भी समाज के स्थायी स्वास्थ्य और विकास के आधार हैं। केवल राजनीतिक सुधार या आर्थिक प्रगति से राष्ट्र महान नहीं बनता, बल्कि तब बनता है, जब व्यक्ति का चरित्र शुद्ध हो, समाज संगठित हो, उसमें समरसता हो, कमजोर वर्ग को उत्थान मिले और राष्ट्र का जीवन उच्च आध्यात्मिक मूल्यों से संपन्न हो।

विशेष रूप से गरीब आदमी के उत्थान पर भागवत का जोर उल्लेखनीय था। उन्होंने कहा कि भारत तभी सशक्त होगा, जब समाज के अंतिम व्यक्ति तक सम्मान और अवसर पहुँचे। यह विचार महात्मा गाँधी के 'अंत्योदय', विनोबा भावे के 'सर्वोदय' और दीनदयाल उपाध्याय के 'एकात्म मानववाद' की पुनर्स्मृति कराता है। आधुनिक भारत की सबसे बड़ी चुनौती यही है कि विकास के लाभ समाज के सभी तबकों तक समान रूप से नहीं पहुँचते। अमीर–गरीब की खाई बढ़ती जा रही है। यदि इस खाई को नहीं भरा गया, तो राष्ट्र की प्रगति अधूरी रह जाएगी। भागवत का दृष्टिकोण यह है कि राष्ट्र तभी महान बन सकता है, जब, उसका सबसे कमजोर नागरिक भी गरिमा और सम्मान के साथ जीवन जी

सके। धर्मों की एकता पर उनका दृष्टिकोण भी उतना ही महत्वपूर्ण था। भारत का इतिहास यही बताता है कि यहाँ विविधता में एकता की परंपरा रही है। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन–सभी धर्म इस भूमि पर फले–फूले हैं और सभी का मूल संदेश करुणा, सेवा और मानवता रहा है। समस्या तब उत्पन्न होती है, जब धर्म को सत्ता की राजनीति से जोड़ा जाता है। भागवत का कहना था कि यदि हम धर्मों के मूल्यों को देखें, तो उनमें कोई टकराव नहीं है। सबका आधार प्रेम, सत्य और सेवा है। यही सांझा आधार भारत को एक ऐसा समाज बनाने में सक्षम है, जो विश्व के लिए अनुकरणीय हो।

भागवत के विचार निश्चित रूप से भारत की साँस्कृतिक परंपरा और संघ की कार्यप्रणाली को नई स्पष्टता देते हैं, लेकिन यहाँ यह प्रश्न भी उठता है कि इन विचारों को व्यवहार में उतारने की राह कितनी सरल है? समाज की जटिलताओं, जातीय और धार्मिक तनावों, राजनीतिक स्वार्थों और आर्थिक विषमताओं के बीच नया मनुष्य बनाना एक दीर्घकालिक साधना है। आलोचक कहते हैं कि संघ के पास विचार तो हैं, लेकिन उनकी जड़ें अभी तक समाज के सभी वर्गों तक गहराई से नहीं पहुँची हैं। विशेषकर अल्पसँख्यक समुदायों में संघ के प्रति संदेह आज भी विद्यमान है। इसलिए केवल वक्तव्यों से नहीं बल्कि ठोस और पारदर्शी कार्यों से यह भरोसा पैदा करना होगा कि संघ का हिंदुत्व वास्तव में सर्वसमावेशी है। इसी तरह गरीब के उत्थान और धर्मों की एकता की बातें विचारणीय हैं, किंतु यह भी देखना होगा कि क्या संघ और उससे जुड़े संगठन इस दिशा में ठोस योजनाएँ और परिणाम दे पा रहे हैं? आलोचक यह प्रश्न उठाते हैं कि विकास की मुख्यधारा में गरीबों की स्थिति सुधारने में सामाजिक संगठनों से अधिक भूमिका सरकार की रही है। अतः यदि संघ इन बिंदुओं को अपनी कार्ययोजना का मूल बनाए, तो उसे केवल नैतिक आह्वान से आगे बढ़कर व्यावहारिक नीतियाँ और कार्यक्रम तैयार करने होंगे। तभी यह दृष्टि प्रभावी सिद्ध होगी और भारत सचमुच उस दिशा में बढ़ सकेगा, जिसकी परिकल्पना व्याख्यानमाला में की गई।

आज की वैश्विक परिस्थितियों पर दृष्टि डालें तो भागवत के विचार और भी प्रासंगिक हो उठते हैं। दुनिया हिंसा, आतंकवाद, युद्ध और उपभोक्तावाद की अंधी दौड़ से त्रस्त है। पर्यावरण संकट दिन–प्रतिदिन गंभीर होता जा रहा है। मानसिक तनाव और आत्मकेंद्रित जीवन–शैली ने मानव को भीतर से खोखला कर दिया है। इन परिस्थितियों में भारत ही वह देश है, जो एक वैकल्पिक जीवन–दर्शन दे सकता है। भारत के पास भौतिक विकास के साथ–साथ आध्यात्मिक समृद्धि की धरोहर है। यही धरोहर भारत को विश्वगुरु बनने की पात्रता प्रदान करती है। संघ की शताब्दी वर्ष की यह व्याख्यानमाला केवल संघ के स्वयंसेवकों के लिए नहीं, बल्कि पूरे देश और विश्व के लिए एक संदेश है। यह संदेश है–नए मनुष्य का निर्माण करना, गरीब को उठाना, धर्मों को जोड़ना, समाज में समरसता स्थापित करना और हिंदुत्व की व्यापक जीवन दृष्टि के आधार पर विश्व को दिशा देना। यह केवल भाषण नहीं बल्कि एक संकल्प है। यदि भारत को सचमुच विश्वगुरु बनना है, तो यह संकल्प पूरे समाज का होना चाहिए।

संघ को लेकर लंबे समय से यह आरोप लगाया जाता रहा है कि उसकी विचारधारा संकीर्ण है, वह केवल बहुसँख्यक समाज का प्रतिनिधित्व करता है, उसमें अल्पसँख्यकों के लिए कोई स्थान नहीं है। भागवत के इन वक्तव्यों ने यह स्पष्ट कर दिया कि संघ का दृष्टिकोण न तो संकीर्ण है और न ही बहिष्कृत करने वाला। संघ का हिंदुत्व सर्वसमावेशी है, जिसमें सभी धर्म और सभी आस्थाएँ स्थान पा सकती हैं। इसका उद्देश्य सत्ता की राजनीति नहीं, बल्कि समाज का नैतिक और साँस्कृतिक पुनर्निर्माण है। संघ की शताब्दी का यह अवसर इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि आज भारत का भविष्य एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है। एक ओर आर्थिक प्रगति, तकनीकी उपलब्धियाँ और वैश्विक मंच पर भारत की बढ़ती प्रतिष्ठा है, तो दूसरी ओर आंतरिक चुनौतियाँ भी हैं–सामाजिक असमानता, जातीय तनाव, धार्मिक विद्वेष और मूल्यहीन राजनीति। इन चुनौतियों का समाधान केवल बाहरी सुधारों से नहीं बल्कि भीतर से परिवर्तन लाने से होगा। यही संघ की कार्यप्रणाली है और यही भागवत का संदेश है। नये क्षितिज की ओर व्याख्यानमाला एक निष्कर्ष की ओर ही नहीं बल्कि एक प्रश्न की ओर भी ले जाती है, क्या हम भारत को केवल भौतिक अर्थों में शक्तिशाली बनाना चाहते हैं, या, उसे वास्तव में विश्वगुरु बनाना चाहते हैं? यदि उत्तर दूसरा है, तो, हमें भागवत के सन्देश को क्रियान्विति का धरातल देना ही होगा। दुनियाँ के लिए अपनेपन का नजरिया विकसित करना होगा, सौदे का नहीं।

नीरज दौनेरिया

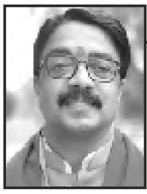

देशव्यापि नशामुक्त भारत अभियान

भारत के सामने एक नयी चुनौती मूँह पसारे खड़ी है– वह यानि युवाओं में बढ़ती नशे की लत। दारू तथा नशे के पदार्थ (ड्रग्स) इनकी लत केवल युवाओं (युवक तथा युवती) में ही नहीं, तो स्कूली बच्चों में भी तीव्र गति से बढ़ रही है।

भौगोलिक दृष्टी से भारत दो प्रमुख नशा उत्पादक क्षेत्रों के बीच में है, भारत के पश्चिम में गोल्डन क्रेसेंट (अफगानिस्तान, पाकिस्तान और ईरान) हैं तथा पूर्व दिशा में गोल्डन ट्रायंगल (म्यांमार, थाइलैंड और लाओस) हैं, जहाँ से नशे के पदार्थो की तस्करी के लिए भारत एक मार्ग है तथा गंतव्य भी, भारत की लगभग 7.5 हज़ार किमी, समुद्री सीमा है तथा 15.1 हजार किमी से अथिक स्थलीय सीमा है, वन प्रदेश, दुर्गम पहाड़ी, रेगिस्तान ऐसी विविधता भी निगरानी रखने के लिये चुनौतिपूर्ण है। साथ ही राजस्थान, बिहार, मध्य प्रदेश, झारखंड, ओडिशा, मणिपुर, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–कश्मीर ऐसे अनेक राज्यों में प्राकृतिक नशे के पदार्थों (अफीम, हेरोइन, गांजा, चरस) की खेती भी बड़े प्रमाण में हो रही है, भारत में भी बड़ी मात्रा में फार्मास्युटिकल इंडस्ट्री की मौजूदगी के कारण तथा उससे ड्रग्स दुरूपयोग के लिए डायवर्जन हो रहा है। ड्रग्स की छुपी प्रयोगशालाओं के माध्यम से भी इसका फैलाव हो रहा है।

आज भारत में सर्वे के अनुसार 6.5 करोड़ से ज्यादा ड्रग्स के (उपयोगकर्ता) एडिक्ट्स हैं, भारत के दस शहरों का जब सर्वेक्षण किया गया, तो, स्कूलों में 13 वर्ष की आयु से ही ड्रग्स का उपयोग प्रारंभ हो जाता है. इसमें स्कूलों में जानेवाले (आयु 10 से 15 वर्ष) बच्चों का भी प्रमाण बड़ा है, दस में से एक बच्चा उपयोग करते हुए पाया गया, बड़ी कक्षाओं में प्रमाण दुगना हो जाता है, कॉलेज में यह प्रमाण कुल विद्यार्थियों से 10 प्रतिशत से भी अधिक है, हमारी युवा पीढ़ी इस संकट से बर्बाद हो रही है।

सरकारी प्रयासों से 2019 से लेकर 2024 के बीच 1,30,634 एकड़ में अवैध अफीम की खेती नष्ट की गई है। प्रतिवर्ष लगभग 1 लाख से अधिक लोगों की गिरफ्तारी नशे के व्यापार या तस्करी के लिए हो रही है,

सन् 2024 में मध्यप्रदेश में 1,300 किग्रा गांजा, कर्नाटक में 1,591 किग्रा गांजा, दिल्ली में 81.5 किग्रा कोकेन, तामिलनाडू में 7,334 किग्रा की ज़ब्ती हुई है, पिछले वर्ष रू.40,000 करोड़ के नशे के पदार्थ पकड़े गए हैं, यह कुल नशे के पदार्थों के व्यापार की अनुमानित 10 प्रतिशत से भी कम है, इससे हम इस संकट की व्यापकता समझ सकते हैं।

नशे के कारण व्यक्ति के रिश्ते, आर्थिक स्थिती, पारिवारिक स्थिती, पढ़ाई, स्वास्थ्य, भविष्य सभी का नुक़सान हो रहा है, इसलिए जागरण कर हमारे युवाओं को व्यायाम, योग, अध्यात्म, संपर्क, प्रबोधन से इस खतरे से बचाना होगा। विद्यालय, महाविद्यालय, कोचिंग क्लासेज आदि शिक्षण संस्थानों में संपर्क कर जागरण करना होगा, परिवारों में सभी से संवाद हो तथा जागरूकता से निगरानी भी रखें, अपने परिवार– कुटुंब के अंदर भी इन बातों की तथा खतरों की खुलकर चर्चा होनी चाहिए, बच्चों के व्यवहार में नशे के कारण से परिवर्तन आता है, जो इस ख़तरे के बारे में संकेत देते हैं। आज स्वास्थ्य क्षेत्र में पुनर्वास सहायता की सुविधाएँ खड़ी हुई हैं, जिसका लाभ हम नशे की लत लगे हुए युवाओं को दे सकते हैं, काउन्सलिंग तथा वैद्यकीय चिकित्सा भी करनी होगी। समाज में भी अत्यंत सतर्कता की आवश्यकता है, कोई भी संदिग्ध गतिविधी हमारे आसपास हो रही है, तो इसका रिपोर्टिंग संपर्क नंबर पर कराना चाहिए. अपने माध्यम से हज़ारों प्रखंडों में ऐसे अनेक कार्यक्रमों का आयोजन वर्षभर में होनेवाला है।

भारत के सीमावर्ती राज्य, बड़े शहरों में यह खतरा अधिक है, जो युवा इस नशे के चक्रव्यूह में अटक गए हैं, उन्हें बाहर निकालने के लिए भी प्रयास करना होगा। सामाजिक–अध्यात्मिक संगठनों तथा समाज की बृहद सहभागिता से इस चुनौती का सामना हम कर सकते हैं।

आज भारत देश विश्व में एक गतिशील आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, वैद्यकीय, और आधारभूत संरचना की दृष्टी से आगे बढ़ता हुआ देश है। संस्कृति और परंपराओं का जागरण भी व्यापक रूप ले रहा है। किंतु, इन सब परिस्थितियों में भी देश के सामने अनेक चुनौतियाँ खड़ी हैं। उनमें से एक प्रमुख चुनौती है नशा। इस देश को खोखला करने के लिए और अनैतिक रूप से पैसा कमाने के लिए अपने इस भारत देश में नशे का कारोबार व्यापक रूप में हो रहा है।

इसकी नेटवर्क संरचना को भी समझना होगा, जिसमें अंतरराष्ट्रीय कार्टेल, मुख्य आपूर्तिकर्ता पाक–अफगान गिरोह, म्यांमार या शान स्टेट कार्टेल जो पूर्वोतर में संकोच है, और 2023 में 5 महाद्वीप वाला एकीकृत रैकेट ये हायर लेवल संरचना है। मिडल लेवल में शहर आधारित गिरोह, जिसमें स्थानीय वितरण नेटवर्क, माफिया गठजोड़ के साथ हथियार और अन्य तस्करी से जुड़ाव और क्रिस्टी भुगतान जो सेल स्ट्रक्चर और एन्क्रीप्टेड संचार ये सब आते हैं। लोकल नेटवर्क में पैडलर जैसे छात्र, प्रवासी, महिलाएँ आती हैं और सोशल मिडिया आधारित ऑर्डर दिया जाता है, जिसमें पिरामिड भर्ती मॉडेल का उपयोग होता है, जहाँ नए सदस्य जोड़ने पर इनाम मिलता है। माने जो ग्राहक है, वहीं पैडलर बन जाता है। एन्क्रीप्टेड ऐप्स, डार्कनेट, एंड टू एंड एन्क्रीप्शन इन आधुनिक प्रणालियों द्वारा ड्रग पहुँचाया जाता है। डार्कनेट, क्रिप्टो करेंसी, कोरियर, पार्सल तस्करी, ड्रोन इनके द्वारा ड्रग्स भारत में और देश के शहरों में दाखिल होता है।

युवाओं में तेजी से बढ़ती नशे की प्रवृत्ति गंभीर चिंता का विषय है। इस चुनौती से निपटने के लिए राष्ट्रव्यापी नशा मुक्ति अभियान की योजना तय हुई है। इस विशेष अभियान को विहिप के युवा संगठन बजरंग दल और दुर्गा वाहिनी प्रमुख रूप से आगे बढ़ाएँगे । इसके अंतर्गत प्रथम चरण में विद्यालयों, महाविद्यालयों और समाज के विभिन्न वर्गों में जागरूकता और खेलकूद के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। युवाओं में नशा मुक्ति अभियानों को प्रभावी बनाने के लिए समाज के विभिन्न संगठनों, समूहों और शासन के साथ समन्वय बढ़ाया जा रहा है।

अतः ये सभी भारत को और खासकर हिंदू युवा शक्ति को खोखला करने का प्रयत्न है। हम सभी को इस ड्रग्स और इनसे जुड़े देशद्रोही और देश विधातक शक्तियाँ इनको परास्त करना ही होगा। विश्व हिंदू परिषद के युवा आयाम बजरंग दल और दुर्गा वाहिनी देश के युवाओं में कार्यरत हैं और राष्ट्रव्यापी कार्य युवाओं में करते हैं। ड्रग्स राष्ट्रव्यापी समस्या है और इस समस्या को नष्ट करने हेतू बजरंगदल और दुर्गा वाहिनी ने देश व्यापी जनजागरण अभियान आरम्भ किया है। आईए, हम सब इस व्यापक अभियान में, जागरण में सहभागी हों, अपने धर्म और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य भाव से योगदान दें।

विहिप केन्द्रीय कार्यालय में पूज्य साध्वी प्रज्ञा भारती जी के मुखारबिंद से

श्रीमद् भागवत कथा का भव्य आयोजन

नई दिल्ली। प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी पितृ पक्ष में विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय कार्यालय, संकट मोचन आश्रम, रामकृष्णपुरम, सेक्टर–6 स्थित हनुमान मंदिर में पूज्य साध्वी प्रज्ञा भारती जी के मुखारबिन्द से दिनांक 15 से 21 सितम्बर, 2025 तक प्रतिदिन सायंकाल 04.00 से 07.30 बजे तक श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया, जिसमें आर.के. पुरम, मुनिरका, बसंत गाँव, सरोजिनी नगर आदि क्षेत्रों के क्षेत्रवासीयों नित्य कथा श्रवण कर पुण्य के भागी बने।

कथा प्रारम्भ होने से पूर्व 14 सितम्बर, 2025 को श्री सनातन धर्म मंदिर, सेक्टर–4, रामकृष्णपुरम से कथा स्थल तक कलश यात्रा का आयोजन किया गया। यह कलश यात्रा सेक्टर–4, सेक्टर–5, सेक्टर–1, मोहन सिंह मार्केट होते हुए कथा स्थल तक पहुँची। इस कलश यात्रा में कलशधारी लगभग 700 महिलाओं ने सहभागिता की।

प्रतिदिन की कथा में विहिप सलाहकार मण्डल के सदस्य मा. दिनेशचन्द्र जी, महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा जी, संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे, संयुक्त महामंत्री श्री कोटेश्वर शर्मा जी, केन्द्रीय मंत्री श्री अशोक तिवारी जी, श्री सुधांशुमोहन पटनायक जी, केन्द्रीय सहमंत्री श्री मनोज जी, श्री हरिशंकर जी, श्री नीरज दौनेरिया जी, धर्मप्रसार विभाग से श्री गुलाब सिंह जी सहित अनेक पदाधिकारी तथा कार्यालय परिसर में निवासरत कार्यकर्ता सपरिवार उपस्थित रहे।

कथा के पश्चात् दिनांक 21 सितम्बर, 2025 को दोपहर 01.00 बजे से प्रभु इच्छा तक भण्डारा का आयोजन हुआ, जिसमें क्षेत्र के 3000 लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। आनेवाले वर्ष में यह आयोजन और भव्य तरीके से मनाया जायेगा, इस कामना के साथ इस आयोजन की पूर्णाहुति हुई।

प्रस्तुति : महेश कुशवाहा

आयुर्वेद के आहार-विषयक महावाक्य

1. 'आरोग्यं भोजनाधीनम्।' (काश्यपसंहिता, खि. 5.9) : सबसे पहले तो हमें यह जान लेना चाहिये, जैसा कि महर्षि कश्यप कहते हैं, कि आरोग्य भोजन के अधीन होता है। सारा खेल भोजन का है। इस महावाक्य का अर्थ यह मानिये कि खाने को खानापूर्ति की तरह मत लीजिये।

2. 'नाप्रक्षालितपाणिपादवदनो' (च.सू.8.20) : महर्षि चरक ने कम से कम पांच हजार साल पहले यह महत्वपूर्ण सूत्र दिया था। आचार्य वाग्भट ने भी इसे सातवीं–आठवीं शताब्दी में धौतपादकराननः (अ.हृ.सू. 8.35–38) के रूप में पुनः लिखा। इसका साधारण अर्थ यह है कि भोजन करने के पूर्व हाथ, पाँव व मुंह धोना आवश्यक है। इसके वैज्ञानिक महत्त्व पर बड़ी शोध हुई है। उनमें से एक बात यह है कि लन्दन स्कूल ऑफ़ हाइजीन एंड ट्रॉपिकल मेडिसिन के वैज्ञानिकों द्वारा की गयी एक शोध से पता लगा है कि हाथ धोये बिना भोजन लेने की आदत के कारण अनेक बीमारियाँ संक्रमित करती हैं। हाथ धोये बिना खाना खाने की आदत के कारण अकेले डायरिया से ही सालाना 23.25 अरब डॉलर की हानि भारत को हो रही है। यह हानि भारतीय अर्थव्यवस्था के कुल जीडीपी का 1.2 प्रतिशत है। हाथ धोने में लगने वाले कुल खर्च को समायोजित करने के बाद भी भारतीय अर्थव्यवस्था को सालाना 5.64 अरब डॉलर की बचत हो सकती है। यह हाथ धोने में संभावित लागत का 92 गुना है। आयुर्वेद में भोजन के सम्बन्ध में अनेक महावाक्य हैं जिनका पालन कर परिवार, समाज और देश का बहुत धन बचाया जा सकता है।

3. 'आहारः प्रीणनः सद्यो बल-देहधारकः। आयुस्तेजः समुत्साहस्मृत्योजोऽग्निविवर्द्धनः।' (सु.चि., 24.68) : स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा और बीमारी को रोकने में भोजन का स्थान रसायन और औषधि से कम नहीं है। इस सूत्र का अर्थ यह है कि आहार से संतुष्टि, तत्क्षण शक्ति, और संबल मिलता है तथा आयु, तेज, उत्साह, याददाश्त, ओज, एवं पाचन में वृद्धि होती है। सन्देश यह है कि साफ़–सुथरा, प्राकृतिक और पौष्टिक भोजन शरीर, मन और आत्मा की प्रसन्नता और स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है।

4. 'नाशुद्धमुखो' (च.सू.8.20) : अशुद्ध मुंह से अर्थात मुंह की शुद्धता सुनिश्चित किये बिना भोजन नहीं लेना चाहिये। साफ़–सफाई के पश्चात ही भोजन का आनंद लेना उपयुक्त रहता है।

5. 'न कुत्सयन्न कुत्सितं न प्रतिकूलोपहितमन्नमाददीत' (च.सू. 8.20) : दूषित अन्न या भोजन या दुश्मन या विरोधियों द्वारा दिया गया भोजन नहीं खाना चाहिये।

6. 'न नक्तं दधि भुञ्जीत' (च.सू.8.20) : रात में दही नहीं खाना चाहिये। असल में दही यदि ताज़ा न हो तो उसके लाभदायक गुण नष्ट हो जाते हैं। इसीलिये यह महावाक्य बहुत उपयोगी है।

7. 'नसक्तूनेकानश्नीयान्न निशि न भुक्त्वा न बहून्न द्विर्नोदकान्तरितात् न छित्वा द्विजैर्भक्षयेत्' (च.सू.8.20) : सत्तू भुने हुये अनाज का आटा–घी और चीनी के मिश्रण के बिना नहीं खाना चाहिये। सत्तू को रात में, भोजन के बाद, अधिक मात्रा में, दिन में दो बार, या पानी पी पी कर ठांस कर, या दांतों को किटकिटाते हुये भी नहीं खाना चाहिये।

8. 'पूर्वं मधुरमश्नीयान्' (सु.सू.46.460) : भोजन में सबसे पहले मधुर या मीठे पदार्थ खाना चाहिये। इसका तात्पर्य यह है कि भोजन पूरा करने के बाद मिठाई या आइसक्रीम में हाथ मारना नुकसानदायक है। भोजन का अंत सदैव कटु, तिक्त या कषाय रस से करना चाहिये।

9. 'आद्यौ फलानि भुञ्जीत' (सु.सू.46.461) : फल भोजन के प्रारंभ में खाना चाहिये। भोजन के अंत में फल खाने की परंपरा अनुचित है।

10. 'पिष्टान्नं नैव भुज्जीत' (सु.सू.46.494) : पीठी वाले भोजन प्रायः नहीं लेना चाहिये। अगर बहुत भूखे हैं, तो, कम मात्रा में पिष्टान्न लेकर उससे दुगनी मात्रा में पानी पीना चाहिये।

धर्मान्तरण का घिनौना सच माँस खिलाकर पिलाते थे खून....

काट दिया कलावा, मिटाया तिलक, रूह कंपा देने वाला खुलासा

आगरा। धर्मांतरण गैंग में महिलाएँ भी शामिल थीं। हर सभा में कलावा काटने और तिलक मिटाने की बात कही जाती थी। धर्म परिवर्तन करने वाले घर में मूर्ति नहीं रखते थे। इसके लिए मना कर दिया जाता था। पुलिस ने गैंग के आठ सदस्यों को गिरफ्तार किया है। शाहगंज पुलिस ने धर्मांतरण कराने वाले गिरोह के मुख्य आरोपी राजकुमार लालवानी और तीन महिलाओं सहित आठ लोगों को गिरफ्तार किया है। आरोपी प्रार्थना सभा में लोगों को बहाने से बुलाते थे। ईसाई धर्म अपनाने पर बीमारी और गरीबी दूर करने का झाँसा देते थे। घर से देवी–देवताओं की मूर्तियाँ हटाने का दबाव डालते थे, हाथों से कलावा कटवा देते थे, तिलक लगाने से रोक देते थे। मुख्य आरोपी भी चार साल पहले हिंदू से ईसाई बना था। इसके बाद वह अन्य लोगों का धर्म परिवर्तन कराने लगा। उसके संपर्क में कई और लोग हैं। उनके बारे में पुलिस जाँच–पड़ताल में लगी है।

डीसीपी सिटी सोनम कुमार ने बताया कि इस मामले में केदार नगर निवासी घनश्याम हेमलानी ने पुलिस से शिकायत की थी। बताया कि उसे राजकुमार ने दो से तीन बार अपने घर बुलाया। इस दौरान हाथ में बंधा कलावा खुलवा दिया, तिलक हटवा दिया, घर से मूर्ति हटाने के लिए कहा। इस पर उन्हें शक हो गया। घनश्याम की शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज कर कार्रवाई शुरु कर दी है। गिरफ्तार आरोपी राजकुमार लालवानी चार साल पहले उल्लहास नगर, महाराष्ट्र गया था। वह यहाँ पर हिंदू से ईसाई बन गया। अपने घर आने के बाद वह धर्म परिवर्तन कराने लगा। लोगों को विश्वास में लेकर वह बीमारी ठीक करने के नाम पर यीशु का स्मरण कराता था। इसके बाद बाइबल पढ़ने को कहता था। इसी के नाम पर वह पैसा भी लेता था। बच्चों की अच्छी पढ़ाई व किसी क्रिश्चियन मिशनरी में नौकरी दिलाने की बात भी करता था। इससे लोग झाँसे में आ जाते थे।

चर्च ऑफ गॉड
नाम से बनाया ग्रुप और चैनल

राजकुमार हर दिन प्रार्थना में शामिल होने के लिए गूगल मीट का लिंक शेयर

गूगल मीट पर प्रार्थना सभा

धर्मांतरण के मामले में गिरफ्तार आरोपी राजकुमार यूँ ही धर्मांतरण नहीं करा रहा था। कई लोग रुपयों के लिए उसका साथ दे रहे थे। यह सभी अन्य लोगों को सभा में आने के लिए तैयार करते थे। गूगल मीट के माध्यम से प्रार्थना सभा में जोड़ते थे। यू–ट्यूब चैनल पर वीडियो अपलोड करके ईसाई धर्म का प्रचार किया करते थे। सभा में कई शहरों के साथ ही स्पेन और दुबई के लोग भी जुड़ जाते थे। पुलिस ने आरोपी राजकुमार के पास से डायरी और रजिस्टर बरामद किए हैं। इनमें कई लोगों के नाम और नंबर की जानकारी मिली है, जिसकी पड़ताल की जा रही है।

डीसीपी सिटी ने बताया कि राजकुमार का साथ अनूप कुमार (पंचशील कालोनी, दौरेठा), जयकुमार (राधे हाईट्स, शास्त्रीपुरम), अरुण कुमार (बारह खंबा, सराय ख्वाजा), कमल कुंडलानी (राहुल ग्रीन, दयालबाग) और आरोपी तीन महिलाएँ दिया करती थीं। सभी लोग अलग–अलग इलाके में जाते थे। गरीब और कम पढ़े लिखे लोगों से कहते थे कि एक बार सभा में आओगे, तो बहुत लाभ होगा, सारे कष्ट दूर हो जाएंगे, कीर्तन से आत्मा को शांति मिलेगी।

रविवार को कोई व्यक्ति सभा में आ जाता था, तो उसे हिंदू धर्म की मान्यताओं को नहीं मानने के लिए कहा जाता था। खाने में मीट भी परोसा जाता था। दावा किया जाता था कि अगर ईसाई धर्म अपना लोगे तो पूरे परिवार की बीमारी और कष्ट दूर हो जाएंगे। राजकुमार लालवानी भी लोगों को यीशु का चमत्कार दिखाकर अपने विश्वास में लेता था। महिला साथियों की मदद से झाड़–फूँक का नाटक करता था। बीमारी दूर करने के लिए कई बार लोगों से पांच से दस हजार रुपये तक लिए जाते थे।

कलावे काट दो, तिलक मिटा दो....

पुलिस के मुताबिक, हिंदू से ईसाई बनने वालों को कभी भी कलावा नहीं पहनने दिया जाता था। तिलक भी नहीं लगाने देते थे। हर सभा में कलावा काटने और तिलक मिटाने की बात कहते थे। धर्म परिवर्तन करने वाले घर में मूर्ति नहीं रखते थे। इसके लिए मना कर दिया जाता था। जो लोग कीर्तन सभा में मांस खाकर खून पीते हैं, वह ईसाई बन जाते हैं। हालाँकि इसके लिए उन्हें किसी तरह का प्रमाणपत्र नहीं दिया जाता था। कई बार लोगों के कष्ट दूर करने के नाम पर रकम भी ली जाती थी। इससे जो फायदा होता था, उसे आरोपी आपस में बांट लिया करते थे।

करता था। इसके माध्यम से सभी एक साथ जुड़ते थे, इसके बाद सभा होती थी। उसने अपना व्हाट्सएप पर चर्च ऑफ गॉड नाम से ग्रुप बना रखा है। इसमें 86 सदस्य जुड़े हुए हैं। उसने चर्च ऑफ गॉड नाम से अपना यू–ट्यूब चैनल भी बनाया है। इस पर वह रविवार के कार्यक्रम की वीडियो अपलोड करता था। इससे भी उन्हें फायदा हो रहा था। वह धार्मिक ग्रंथ बाइबल अनुयायियों को बांटता था। आरोपी राजकुमार ने पुलिस को पूछताछ में बताया कि वह कई लोगों का धर्म परिवर्तन करा चुका है।

आरोपियों से यह हुआ बरामद – 15 बाइबिल, तीन ईसाई गीतों की किताब, चार डायरी, आठ कॉपी व रजिस्टर, छह मोबाइल, दो लग्जरी कार और 13,165 रुपये।

इनकी हुई गिरफ्तारी – 1. राजकुमार लालवानी, निवासी केदार नगर, शाहगंज। 2. अनूप कुमार, निवासी पंचशील कॉलोनी, दौरेठा, शाहगंज। 3. कमल कुंडलानी, निवासी राहुल ग्रीन, दयाल बाग, न्यू आगरा। 4. जयकुमार, निवासी राधे हाइट्स, सिकंदरा। 5. अरुण, निवासी बारह खंबा, थाना शाहगंज के साथ ही तीन महिलाओं की भी गिरफ्तारी हुई है।

पुलिस आयुक्त दीपक कुमार ने बताया कि जेल भेजे गए आरोपियों से कई महत्वपूर्ण जानकारी हाथ लगी है। इन पर टीमें कार्य कर रही हैं। आरोपियों को चिह्नित किया जा रहा है। इसके बाद केस में नाम बढ़ाए जाएंगे। पाकिस्तान के अलावा कनाडा और अमेरिका से भी फंडिंग की बात सामने आई थी। कई और आरोपियों के नामों के बारे में पता चला है।

(संवाद न्यूज एजेंसी, आगरा अरुण पाराशर की रिपोर्ट) (अमर उजाला से साभार, 03 सितम्बर)

हिंदू युवतियों का शोषण, धर्म परिवर्तन!

नौकरी छोड़ने वाली लड़की बोली पुलिस सुन ही नहीं रही

देवरिया (उ.प्र.)। आगरा, बलरामपुर के बाद अब देवरिया में भी अवैध धर्म परिवर्तन गिरोह ने अपने पैर पसार लिए हैं। एक युवती ने यहाँ के एक मॉल में धर्मांतरण का धंधा चलने का आरोप लगाया है। उसने पुलिस को बताया कि हिंदू लड़कियों का मॉल में धर्म परिवर्तन कराया जा रहा है। उसने मॉल के ऊपरी कमरों में लड़कियों के शारीरिक शोषण होने का भी आरोप लगाया। युवती का कहना है कि पुलिस उसकी शिकायत पर केस दर्ज नहीं कर रही है। उसने एसपी से गुहार लगाई है।

देवरिया के एक मॉल में काम कर चुकी लड़की ने धर्म परिवर्तन और शारीरिक शोषण समेत कई आरोप लगाए हैं। उसने मॉल मालिक और परिवार पर मिली–भगत का आरोप लगाया। युवती ने बताया कि मॉल मालिक विशेष समुदाय के हैं। वह अपनी पत्नी और साले के साथ मिलकर धर्म परिवर्तन का धंधा चला रहे हैं। मॉल में बाहर से आए व्यापारियों के पास लड़कियाँ भेजी जाती हैं। ये लोग लड़कियों का अश्लील वीडियो बनाकर उनको ब्लैकमेल करते हैं। युवती का दावा है कि धर्मांतरण और शोषण से परेशान होकर उसने यहाँ नौकरी छोड़ दी है।

मॉल मालिक का रिश्तेदार जा चुका है जेल – युवती ने बताया कि मॉल मालिक का एक रिश्तेदार कुछ समय पहले हिंदू लड़की को भगाने के मामले में जेल जा चुका है। मॉल के मालिक और रिश्तेदार ने उसका भी शारीरिक शोषण किया है। आरोपियों ने उसका अश्लील वीडियो बना लिया और ब्लैकमेल करने लगे थे।

छांगुर बाबा के कारनामे भूले नहीं लोग – आपको बता दें कि दो दिन पहले ही आगरा में हिंदुओं को ईसाई बनाने वाले गैंग का पर्दाफाश हुआ है। ये लोग नौकरी और पैसे का लालच देकर गरीब हिंदुओं का धर्म परिवर्तन करवा रहे थे। इससे पहले बलरामपुर में छांगुर बाबा के कारनामे सामने आए थे। छांगुर बाबा ने अवैध धर्म परिवर्तन के धंधे से करोड़ों रुपये कमाए। इस मामले में प्रतिदिन नए–नए अपडेट आ रहे हैं।

(नवभारत टाईम्स, 5 सितम्बर से साभार)

पानीपत की धरती से सामाजिक समरसता का संदेश

आज पानीपत में विश्व हिंदू परिषद पानीपत द्वारा MJR में सामाजिक समरसता संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसका उद्देश्य समाज में सामाजिक समरसता का वातावरण बनाना है। संगोष्ठी में मुख्य वक्ता विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय सह संगठन महामंत्री श्री विनायक जी देशपांडे रहे।

श्री विनायक जी ने कहा कि हिंदू समाज में व्याप्त सामाजिक वंचित भाव को समाप्त करना है। वहीं कार्यकम में अध्यक्ष रहे कुंवर रविन्द्र जी सैनी, श्री नरेशानंद महाराज जी ने

समाज को एकजुट रहने का संदेश दिया।

कार्यक्रम में विहिप हरियाणा के अध्यक्ष पवन कुमार जी, प्रांत उपाध्यक्षा श्रीमती विजय लक्ष्मी पालीवाल, प्रांत गौ सेवा प्रमुख महेंद्र कंसल, विभाग संघचालक सुशील गौड़, आरएसएस के जिला कार्यवाह धर्मेन्द्र जी, कुरुक्षेत्र विभाग संगठन मंत्री कुलदीप जी, विभाग मंत्री पुनीत जी, प्रांत सेवा प्रमुख राजीव भाटिया जी, प्रांत गौरक्षा एवं संवर्धन के सह प्रमुख कर्ण सिंह, जिला अध्यक्ष सतीश ढींगरा, जिला मंत्री विनोद जी, मंच का संचालन कर रहे मुकेश मास्टर, सह मंत्री पवन जी एवं कमल शर्मा, कोषाध्यक्ष सुरेंद्र शर्मा, बजरंग दल से जिला संयोजक बॉबी कश्यप, जिला सह संयोजक महेश जी, जिला मिलन प्रमुख प्रवीण जी, शिवकुमार, विक्की, विशाल, मोनू, विकास व समाज के प्रबुद्ध जनमानस, मातृशक्ति, दुर्गावाहनी, बजरंग दल के सैकड़ों कार्यकर्ता रहे।

सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में पहला ऐतिहासिक
संस्कृत रामायण का प्रीमियर

सिडनी, ऑस्ट्रेलिया – 13 सितंबर 2025। सिडनी, न्यू साउथ वेल्स, ऑस्ट्रेलिया में वीएचपी संस्कृत स्कूल के युवा विद्यार्थियों ने, सँस्कृत की शास्त्रीय भाषा में श्रद्धेय वाल्मिकी रामायण के सभी छह कांडों का संपूर्ण मंचन प्रस्तुत करके इतिहास रचा। यह अभूतपूर्व साँस्कृतिक मील का पत्थर द रीजेंसी फंक्शन सेंटर, सिडनी में स्कूल के वार्षिकोत्सव समारोह के दौरान हुआ। यह प्रदर्शन एक विद्वतापूर्ण और कलात्मक विजय थी, जो भारत की शाश्वत सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत के लिए एक शानदार श्रद्धांजलि थी। प्रामाणिकता, श्रद्धा और युवा जोश के साथ प्रस्तुत इस मंचन ने उदाहरण दिया कि कैसे प्राचीन परंपराएँ सुदूर तटों पर भी युवा पीढ़ी को प्रेरित करती रहती हैं। पंद्रह वर्ष से कम उम्र के 200 से अधिक छात्रों ने उल्लेखनीय समर्पण और अनुशासन के साथ भाग लिया। प्रशंसनीय शिष्टता के साथ, उन्होंने वाल्मिकी रामायण के छह महान काण्डों को पूरी तरह से सँस्कृत में जीवंत कर दिया।

वीएचपी सँस्कृत स्कूल की प्रत्येक शाखा ने एक काण्ड प्रस्तुत किया, जिससे पाठ का पूर्ण और सामंजस्यपूर्ण प्रस्तुतिकरण सुनिश्चित हुआ। समर्पित समन्वयकों ने स्क्रिप्ट की तैयारी और संवादों की निगरानी की, जबकि प्रामाणिक वेशभूषा और पारंपरिक प्रॉप्स ने प्रदर्शन में साँस्कृतिक भव्यता जोड़ दी।

- बाल कांड – भगवान राम की दिव्य उत्पत्ति और बचपन।
- अयोध्या कांड – वनवास और पितृ कर्तव्य की मार्मिक कहानी।
- अरण्य कांड – वन जीवन का परीक्षण और सीता का अपहरण।
- किष्किंधा कांड – सुग्रीव से मित्रता और हनुमान की वीरता।
- सुंदर कांड – हनुमान की लंका तक की वीरतापूर्ण यात्रा।
- युद्ध कांड – चरम युद्ध और अधर्म पर धर्म की शाश्वत विजय।

इस कार्यक्रम में मान्यता का एक गौरवपूर्ण क्षण भी शामिल था। ऑस्ट्रेलिया सरकार के न्यू साउथ वेल्स शिक्षा विभाग ने सामुदायिक भाषा स्कूलों के उत्कृष्ट उपलब्धि हासिल करने वालों को सम्मानित किया। विहिप संस्कृत विद्यालय के सात छात्रों को प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए :– गंभीर शास्त्री–मंत्री पुरस्कार, प्रहर्ष राव–अत्यधिक सराहनीय पुरस्कार, लक्ष्य प्रदीप–अत्यधिक प्रशंसित पुरस्कार, मनसा चिराग भटनागर–प्रशंसित पुरस्कार, प्रणथी बसवनहल्ली प्रशांत–मेरिट अवार्ड, देविका मिदिगेसी–मेरिट अवार्ड, रचित राज–मेरिट अवार्ड

वीएचपी सँस्कृत विद्यालय की समन्वयक और वीएचपी ऑस्ट्रेलिया की राष्ट्रीय महासचिव श्रीमती अकिला रामरथिनम ने छात्रों की उपलब्धियों पर गहरा गर्व व्यक्त करते हुए कहा कि 'हमारी युवा पीढ़ी को यहाँ ऑस्ट्रेलिया में भी अपने श्रद्धेय पूर्वजों की गहन विरासत को संरक्षित और आगे बढ़ाते हुए देखना वास्तव में खुशी की बात है। यह मील का पत्थर साँस्कृतिक निरंतरता और भक्ति का एक चमकदार उदाहरण है।'

वीएचपी सँस्कृत स्कूल, वीएचपी ऑस्ट्रेलिया का एक प्रभाग, औपचारिक रूप से न्यू साउथ वेल्स शिक्षा विभाग द्वारा सँस्कृत के लिए सामुदायिक भाषा स्कूल के रूप में मान्यता प्राप्त है। छह केंद्रों–द पॉन्ड्स, कार्लिंगफोर्ड, होमबश, नुवारा, टूंगैबी और वेटारा के साथ स्कूल युवाओं के बीच संस्कृत सीखने और साँस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देने के अपने मिशन को जारी रखे हुए है।

विहिप-प्रांतीय मार्गदर्शक मंडल बैठक सम्पन्न

नागपुर, 16 सितम्बर 2025। विश्व हिंदू परिषद धर्माचार्य संपर्क आयाम, विदर्भ प्रांत के अन्तर्गत केंद्रीय एवं प्रांतीय मार्गदर्शक मंडल की बैठक नागपुर स्थित स्वामी नारायण मंदिर में सम्पन्न हुई। बैठक का अध्यक्ष स्थान परम पूज्य जितेंद्रनाथ महाराज (मठाधिपति, देवनाथ मठ, अंजनगांव सुर्जी, अमरावती) ने सुशोभित किया तथा प्रमुख उपस्थिति में विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय महामंत्री मा. बजरंग लाल जी बागड़ा उपस्थित रहे। इस बैठक में विभिन्न पंथ एवं संप्रदायों के 52 संत–महंत एवं धर्माचार्य तथा परिषद के 27 कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। परिषद की परंपरा के अनुसार दीप प्रज्वलन, ओंकार गुंजन, एकात्मता एवं विजय महामंत्र के साथ बैठक का शुभारंभ हुआ।

विदर्भ प्रांत मंत्री श्री प्रशांत जी तितरे ने प्रांत में चल रहे परिषद के कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। बैठक का नियोजन एवं संचालन ह.भ.प. धनंजय महाराज वासाडे (प्रांत धर्माचार्य संपर्क प्रमुख) ने किया। प्रांत सहमंत्री श्री गणेश कालकर, प्रांत संगठन मंत्री मा. विष्णु जी देशमुख एवं क्षेत्र धार्मिक विभाग प्रमुख श्री संजय मुरदाळे ने भी मार्गदर्शन प्रदान किया।

- परिवार व्यवस्था और कुटुंब प्रबोधन धर्मसंरक्षण जितना ही महत्वपूर्ण है।
- घटती हिंदू जनसँख्या गंभीर चिंता का विषय है, विवाह एवं परिवार जीवन में जागरूकता आवश्यक है।
- समाज में जाति–पांति के भेद मिटाकर समरसता निर्माण संतों का ध्येय होना चाहिए।
- ग्रामीण एवं बस्ती क्षेत्र में संतों का सीधा संपर्क बढ़ना चाहिए।
- "संतों के आशीर्वाद और मार्गदर्शन के बिना हिंदू समाज का संगठन संभव नहीं है। आने वाले समय में प्रत्येक जिला और प्रत्येक विभाग में संतों की सक्रिय भागीदारी अनिवार्य है।"

बैठक के दूसरे सत्र में संत–महंतों ने समाज जीवन, समरसता, परिवार प्रबोधन और धर्मजागरण पर विचार व्यक्त किए। उपस्थित संतों में ग्रामगीताचार्य जनार्दन पंत बोधे महाराज, जगद्गुरु रामराजेश्वर महाराज, पूज्य 1008 सिद्धचैतन्य शिवाचार्य महाराज, पूज्य भागीरथजी महाराज, ह.भ.प. नामदेव महाराज काकड़े, संतोष साई नवलानी (सिंधी समाज प्रमुख), सूर्यानंद भारती महाराज, साधनाताई रोंगे महाराज, डॉ. प्रशांत महाराज ठाकरे आदि शामिल रहे। केंद्रीय महामंत्री मा. बजरंग लाल जी बागड़ा ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदू समाज अनेक आंतरिक एवं बाह्य चुनौतियों का सामना कर रहा है, ऐसे समय में संतों की भूमिका अग्रणी होनी चाहिए।

बैठक में यह निर्णय भी लिया गया कि अक्टूबर–नवंबर में विभागीय, शहर एवं जिला स्तर पर मार्गदर्शक मंडल की बैठकें आयोजित होंगी, संतों के प्रवास बस्ती और संवेदनशील क्षेत्रों में सुनिश्चित किए जाएंगे तथा प्रत्येक जिले में मार्गदर्शक मंडल की सूची अद्यतन की जाएगी।

बैठक का समारोप अध्यक्ष स्थान सुशोभित करने वाले परम पूज्य जितेंद्र नाथ महाराज ने किया। उन्होंने कहा कि धर्म और राष्ट्र अभिन्न हैं और संतों की भूमिका दोनों ही क्षेत्रों में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

niru_risaldar@rediffmail.com

हिंदू हेरिटेज सेंटर में गणेशोत्सव

न्यूजीलैंड की हिंदू परिषद ने हाल ही में साँस्कृतिक और आध्यात्मिकता का एक विशेष दिन मनाया। रोटोरुआ में हिंदू हेरिटेज सेंटर में गतिविधियाँ, परिवारों, बच्चों को एक साथ लाना, समुदाय के सदस्य शिक्षा, भक्ति और आनंद के माहौल में।

हिंदू धर्मग्रंथ कक्षाओं की पहली वर्षगांठ (11.00 – 11.30 पूर्वाह्न) – परिषद ने साप्ताहिक हिंदू शास्त्र कक्षाओं के एक वर्ष के सफल समापन को चिह्नित किया–एक मील का पत्थर जिसने बच्चों और परिवारों को आध्यात्मिक शिक्षा और साँस्कृतिक संवर्धन में संलग्न किया है। पिछले वर्ष ईश्वरी वैद्य के मार्गदर्शन में बच्चों ने वैदिक श्लोक सीखे हैं और मंत्रों को उनके अर्थों के साथ, कहानी सुनाने, जप करने, चर्चा करने आदि द्वारा समर्थित किया गया है।

दैनिक जीवन में व्यावहारिक अनुप्रयोग – वार्षिकोत्सव में चयनित विद्यार्थियों ने श्लोक और मंत्रों का उच्चारण कर गर्मजोशी से वाहवाही प्राप्त की। अभिभावकों ने कक्षाओं के सकारात्मक प्रभाव के बारे में बात की। अपने बच्चों के ज्ञान, आत्मविश्वास और साँस्कृतिक पहचान की भावना को गहरा करना। इससे अधिक याद रखने के लिए, कक्षाएँ सार्वभौमिक मूल्यों, अपनेपन और विरासत के गर्व पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

मिट्टी कार्यशाला (सुबह 11.30 बजे – दोपहर 1.00 बजे) – उत्सव के बाद, रोटोरुआ द्वारा वित्त पोषित कला कार्यशालाओं की एक नई श्रृंखला की पहली श्रृंखला सिविक आर्ट्स ट्रस्ट का आयोजन किया गया। हिंदू परिषद सक्रिय रूप से बच्चों और परिवारों को इसमें शामिल कर रही है। रंगोली, मेहंदी और अन्य पारंपरिक कलाएँ साँस्कृतिक बंधनों को मजबूत करती हैं और सम्मान को बढ़ावा देती हैं। इस शुभ शुरुआत के लिए बच्चों ने प्राकृतिक मिट्टी से अपनी गणेश मूर्तियाँ बनाईं। कार्यशाला ने रचनात्मकता, साँस्कृतिक निरंतरता को बढ़ावा देते हुए पर्यावरण–अनुकूल प्रथाओं को बढ़ावा दिया।

सामुदायिक भावना – माता–पिता और परिवार इसमें शामिल हुए, जिससे

एक जीवंत, उत्सवपूर्ण माहौल बन गया। सीखने, हँसी और भक्ति के साथ।

'यह हमारे लिए वास्तव में एक अद्भुत अनुभव था, खासकर बच्चों के लिए। आन्या को यह बहुत पसंद आया। मिट्टी के साथ काम करना। कार्यशाला के बाद उन्होंने मुझसे कहा, 'मैं अपने गणेश को घर ले जाना चाहती हूँ।' जिसने मेरे दिल को खुशी से भर दिया। इस तरह के आयोजनों के माध्यम से, आन्या न केवल हमारे बारे में सीख रही है। संस्कृति और परंपराओं के साथ–साथ इसके हर पल का आनंद भी उठा रही है। आयोजन के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद। यह यादगार अनुभव, "श्रद्धा गुप्ता ने कहा।

'इतनी सुंदर गणेश जी की मूर्तियाँ बनाने के लिए सभी छोटे कलाकारों को हार्दिक धन्यवाद। आपकी रचनात्मकता, प्रेम और भक्ति ने कार्यशाला को वास्तव में विशेष बना दिया। भगवान गणेश आपको आशीर्वाद दें, हमेशा अनंत खुशी, ज्ञान और आनंद के साथ" – मोहित शर्मा। दिन का समापन हिंदू हेरिटेज में पहले सार्वजनिक गणेश विसर्जन उत्सव के साथ हुआ। गणेश चतुर्थी के अंत का प्रतीक। कार्यक्रम में प्रार्थना, भजन, साँस्कृतिक प्रदर्शन, भक्ति गायन और पारंपरिक नृत्य, एक जीवंतता पैदा करते हैं। विसर्जन समारोह के हिस्से के रूप में, भगवान गणेश की मिट्टी की मूर्ति को सम्मानपूर्वक स्थापित किया गया। जल में विसर्जित करना, उपयोग को सुदृढ़ करते हुए सृजन और विघटन के चक्र का प्रतीक है। पर्यावरण की रक्षा के लिए प्राकृतिक, बायोडिग्रेडेबल मूर्तियों की।

कोमल साहनी समन्वयक, हिंदू यूथ न्यूजीलैंड रोटोरुआ और कार्यक्रम के आयोजक ने कहा कि 'गणेश विसर्जन उत्सव और चिंतन दोनों का क्षण है।' 'हम एक साथ आते हैं। एक समुदाय के रूप में बाधाओं को दूर करने के लिए भगवान गणेश को धन्यवाद देना और आशीर्वाद मांगना। ज्ञान, शांति और समृद्धि। साथ ही, हम देखभाल के प्रति अपने कर्तव्य के प्रति भी सचेत हैं। हिंदू हेरिटेज सेंटर साँस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक केंद्र के रूप में काम करता है। गतिविधियाँ, जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों का सीखने, जश्न मनाने और एक साथ बढ़ने के लिए स्वागत करना।

hindu.nz@gmail.com

हर काम और हर श्रमिक का सम्मान करें, तभी समृद्ध होगा समाज : मिलिंद परांडे

ग्वालियर (म.प्र.), 31 अगस्त 2025। विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय संगठन महामंत्री मिलिंद परांडे ने ग्वालियर में आयोजित एक कार्यक्रम में कहा कि समाज की समग्र प्रगति के लिए हमें हर तरह के कार्य और हर श्रमिक का सम्मान करना होगा। उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज इंजीनियरों और डॉक्टरों जैसे पेशों का तो सम्मान है, लेकिन अन्य पेशेवरों जैसे पारंपरिक कारीगरों और अन्य मेहनतकशों को वह सम्मान नहीं मिल पाता, जिसके वे हकदार हैं।

समाज के सामने प्रमुख चुनौतियों पर हुआ संवाद – श्री परांडे, विवेकानंद सभागार में नगर के अधिवक्ता, चिकित्सक, अध्यापक, व्यवसायी तथा अन्य नागरिकों के साथ 'वर्तमान परिवेश में विमर्श का महत्व' नामक एक विशेष "संवाद" कार्यक्रम में बोल रहे थे। इस संवाद में आज के अनुकूल समय में हिंदू समाज के सामने आ रही कुछ प्रमुख चुनौतियों पर विस्तृत चर्चा हुई। इन चुनौतियों में संस्कारों का क्षरण एक बड़ा मुद्दा है, क्योंकि आधुनिक जीवनशैली के कारण हमारी पारंपरिक शिक्षा और मूल्य कमजोर हो रहे हैं। वहीं घटती हिंदू जन्म दर भी एक गंभीर विषय है, जो भविष्य में जनसँख्या संतुलन को प्रभावित कर सकता है। इसके अलावा लव जिहाद और मतांतरण जैसे संवेदनशील मुद्दों पर भी गहन विचार–विमर्श किया गया, जिन्हें समाज के लिए बड़ी चुनौतीयाँ माना गया। कार्यक्रम में सामाजिक समरसता बनाए रखने की आवश्यकता पर भी जोर दिया गया, ताकि सभी वर्ग सद्भाव और एकता के साथ रह सकें।

श्रम की प्रतिष्ठा बढ़ाना आवश्यक – श्री परांडे ने कहा कि यह समय है कि हम सब मिलकर यह समझें कि समाज में श्रम की प्रतिष्ठा थोड़ी कम हो रही है। उन्होंने कहा कि "जब तक हम सभी तरह के कार्यों को महत्व नहीं देंगे, तब तक हमारा समाज पूरी तरह से समृद्ध नहीं हो सकता। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी पेशे से जुड़ा हो, उसे सम्मान मिले।"

उन्होंने जोर देकर कहा कि हमें ऐसे वातावरण का निर्माण करना होगा, जहाँ सभी लोग मिलकर काम करें, और एक दूसरे के जीवन में सहयोग करें। उन्होंने कहा कि यह हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम अपनी समझ को मजबूत करें और भविष्य में एक ऐसे समाज का निर्माण करें, जो सहयोग, सम्मान और श्रम की प्रतिष्ठा पर आधारित हो।

पारिवारिक मूल्यों पर भी जताई चिंता – श्री मिलिंद परांडे ने जनसँख्या के संतुलन और परिवारों में घटते रिश्तों पर भी अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि परिवार में रिश्तों का कमजोर होना एक गंभीर विषय है। उन्होंने इसे भारत के मजबूत आधार 'कुटुम्ब प्रबोधन' के लिए एक बड़ा खतरा बताया। उन्होंने कहा कि हमें अपनी पारिवारिक परंपराओं को सहेज कर रखना होगा, क्योंकि इसी में हमारी खुशहाली निहित है।

कार्यक्रम में गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति – कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य वक्ता मिलिंद परांडे, अध्यक्ष डॉ. समीर गुप्ता, विहिप प्रांत मंत्री नवल भदौरिया और प्रांत विशेष संपर्क प्रमुख डॉ. कमल भदौरिया ने भारत माता और भगवान श्रीराम के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलित कर किया। विभाग मंत्री मुकेश गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत और परिचय कराया। सत्र के प्रारंभ में डॉ. समीर गुप्ता ने अपने विचार रखे, जिसके बाद मिलिंद परांडे ने अपना बौद्धिक सत्र दिया। उदयभान रजक ने एकल गीत गाया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. कमल भदौरिया ने सभी का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर विहिप भोपाल क्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन मंत्री जितेंद्र पवार, विहिप संगठन मंत्री सुरेंद्र सिंह, विहिप प्रांत उपाध्यक्ष पप्पू वर्मा, प्रांत सह विशेष संपर्क प्रमुख मनोज साही, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह संपर्क प्रमुख नवल शुक्ला सहित महानगर के कई प्रबुद्धजन और व्यापारीगण उपस्थित रहे।

सिडनी, न्यू साउथ वेल्स, ऑस्ट्रेलिया में वीएचपी संस्कृत स्कूल के युवा विद्यार्थियों ने
संस्कृत की शास्त्रीय भाषा में श्रद्धेय वाल्मिकी रामायण के सभी छह कांडों का संपूर्ण मंचन प्रस्तुत करके इतिहास रचा

विहिप केन्द्रीय कार्यालय में पितृपक्ष के अवसर पर श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन हुआ जिसमें विहिप सलाहकार मण्डल के सदस्य मा. दिनेशचन्द्र जी, महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा जी, संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे, प्रसिद्ध उद्योगपति श्री महेश भागचंढका जी उपस्थित रहे।

कुशभवनपुर, सुल्तानपुर में आयोजित सामाजिक समरसता संगोष्ठी पर पूज्य संत, प्रांत के पदाधिकारियों के साथ उपस्थित
विहिप सह संगठन महामंत्री श्री विनायकराव देशपाण्डे तथा संगोष्ठी में उपस्थित मातृशक्ति व कार्यकर्ता

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 28.09.2025
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्‌श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी